पवित्र कुर्आन

अंश ३०

भाष्य भुमिका

अनुवाद : **अज़ीज़ुल हक उमरी**
(एम.ए.)

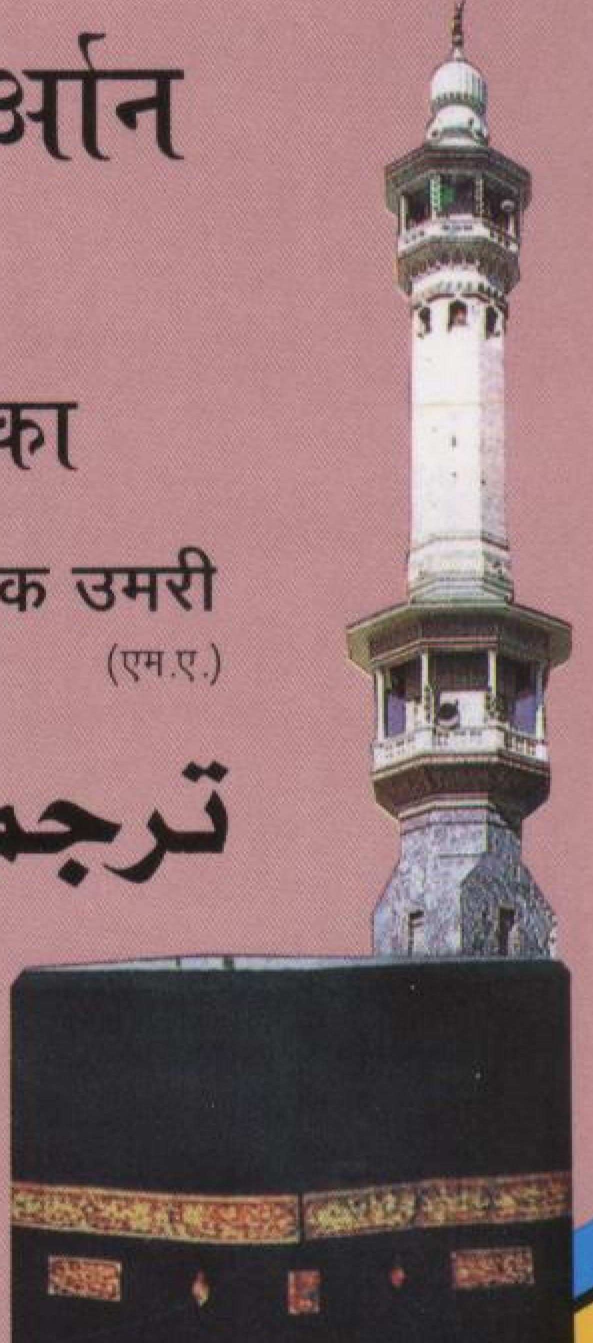

ترجمة جزء عم

مترجم
عزيز الحق عمري

مركز توعية الجاليات بالقصيم
FOREIGNERS GUIDANCE CENTER IN GASSIM ZONE

الهندية
250

هواتف مركز توعية الجاليات بالقصيم

م	الاسم	الهاتف
١	سنترال المركز	٣٢٣١٤٠٥ - ٣٢٤٣١٠٠ - ٣٢٤٨٩٨٠
٢	فاكس المركز	٣٢٤٥٤١٤
٣	هاتف المدير	٣٢٣٤٤٠٣ جوال المدير : ٠٥٥١٤٤٦٠٠
٤	هاتف النائب	٣٢٣٦٨١٦ جوال النائب : ٠٥٥١٤٤٣٠٠

فروع مركز توعية الجاليات بالقصيم

م	اسم الفرع	الهاتف	م	اسم الفرع	الهاتف
١	فرع الخبيب	٣٢٥٠١٤٢	١٠	فرع القوارة	
٢	فرع البدائع	٣٣٢١٣٦٢	١١	فرع الصفراء ببريدة	٣٨٢١٦٢٠
٣	فرع عيون الجواء	٣٩١١٣١٣	١٢	فرع قبة	
٤	فرع البصر	٣٨١٢٨٢٨	١٣	فرع قصيباء	٣٢٣٠١٦٨
٥	فرع الشماسية	٣٤٠١٩١١	١٤	فرع دخنة	٣٢٤٨١٠٥
٦	فرع الشيحية	٣٣٠٠٠٤٧	١٥	فرع ضرية	٣٦٤٩٦٣٣
٧	فرع رياض الخبراء	٣٣٤١٧٥٧	١٦	الفرع النسائي	٣٢٤٨٩٨٠
٨	فرع المذنب	٣٤٢٠٨١٥	١٧	فرع عقلة الصقور	٢٤٣٠٠١٩
٩	فرع الربيعية	٣٤٠١٠٠٨	١٨	فرع الوطنية	٣٩١١٢٠٤

مكتبات مركز توعية الجاليات بالقصيم

م	اسم المكتبة	الهاتف	م	اسم المكتبة	الهاتف
١	المكتبة المركزية بالخبيب	٣٢٥٠١٤٢	٤	مكتبة مطار القصيم	٣٨٠٠٠٠٦
٢	مكتبة أبا الدود	٣٤٥٠٧٠٥	٥	مكتبة البطين	٣٢٤٦٥٧٢
٣	مكتبة المنطقة الصناعية	٣٢٣٦٤١٢	٦	مكتبة الرضوان بالبصر	

पवित्र कुर्आन

अंश ३०

भाष्य भुमिका

पवित्र कुर्आन

अंश ३०

भाष्य भुमिका

अनुवाद : **अज़ीज़ुल हक उमरी**
(एम.ए.)

प्राक्कथन

"अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं कृपाशील है"

इस विश्व में अन्तिम महा ईश दूत नराशंस मुहम्मद (आप पर अल्लाह की दया एवं शान्ति हो) तक मानव संसार के सुधार एवं सत्य मार्ग का दर्शन कराने के लिये प्रत्येक युग तथा वर्ग में हजारों ईश दूत आये और सभी की यह मूल शिक्षा रही कि मात्र एक अल्लाह की पुजा करो जिससे अन्य कोई पुज्य नहीं तथा इस में किसी प्रकार का मिश्रण न करो, किन्तु कुच्छ युग के पश्चात धर्म एवं धर्म शास्त्रों में परिवर्तन कर दिये गये, तथा धर्म की ग्लानि एवं धर्म के नाम पर अधर्म का प्रचार किया जाने लगा तो अल्लाह की ओर से धर्म की स्थापना के लिये ईश दूत आते रहें, ईश दूतों की इसी श्रृंखला की अन्तिम कड़ी नराशंस हैं एवं पवित्र कुर्आन अन्तिम धर्म शास्त्र है, जो आप पर उतारा गया और अब पुर्ण मानव जगत के लिये प्रलय तक यही एकमात्र पथ प्रदर्शक है, आप के पश्चात प्रलय तक अन्न कोई ईश दूत एवं धर्म शास्त्र नहीं आयेगा, अतः इस अन्तिम ईश्वरीय शास्त्र के उपदेशों को मानव संसार तक पहुंचाना हमारा कर्तव्य है । इसी कारण हमने पवित्र ईश - वाणी कुर्आन के तीस्वें अंश का अनुवाद हिन्दी भाषा में किया है कि भारत के हिन्दी भाषी भाईयों तक यह पवित्र उपदेश पहुंच सके ।

यह हमारा प्रथम प्रयास है जिस के सफल होने पर हम शेष अंशों का अनुवाद करने का साहस रखते हैं ।

यह ज्ञातव्य है कि हिन्दी भाषा में पवित्र कुर्आन के अनेक अनुवाद उपलब्ध हैं किन्तु उनकी लिपि भर देवनागरी तथा भाषा उर्दू है । जिसके कारण हिन्दी भाषी भाईयों के लिये उस का समझना कठिन है हमें आशा है कि यह अनुवाद उनके लिये अधिक सरल एवं लाभप्रद सिद्ध होगा ।

परमेश्वर से विनय है कि इस अनुवाद को हिन्दी भाषी भाईयों के लिये सरल एवं हितकारी बनायें ।

अजीजुल हक़ उमरी

२०/२/९५

सूरतु न्नबअ

अल्लाह के नाम से जो दयावान एवं कृपाल है ।

वह किस विषय में प्रश्न कर रहे हैं ? (१) घोर सूचना के विषय में ? वह उस में मतभेद कर रहे हैं । (३) निश्चय ही वह जान लेंगे, (४) फिर निश्चय ही वह जान लेंगे । (५) क्या हमने धरती को बिस्तर नहीं बनाया ? (६) तथा पर्वतों को खूँटे ? (७) तथा तुम्हें जोड़ा पैदा किया, (८) एवं तुम्हारी निद्रा को स्थिरता, (९) तथा रात्रि को वस्त्र बनाया, (१०) तथा दिन को कमाई का समय, (११) एवं तुम्हारे ऊपर सात दृढ़ गगन बनाये (१२) और एक दहकता हुआ चिराग (सूर्य) बनाया (१३) गगन बनाये (१४) तथा मेघों से मूसला धार वर्षा की, (१५) ताकि अन्न तथा वनस्पति उपजायें, (१६) और घने बाग। (१७)

भावार्थ:-

जब महाईश दूत ने मक्का के निवासियों से प्रलय की चर्चा की तो किसी ने कहा कि यह संभव नहीं, किसी ने कहा कि यदि प्रलय होगी तो क्युं नहीं होती तथा होगी तो कब ? इस पर अल्लाह ने यह सूरह उतारी कि प्रलय का होना निश्चित है और जब होगी तो इन्हें ज्ञान हो जायेगा । क्या जिस अल्लाह ने इस पृथ्वी एवं पर्वतों तथा आकाश को रचा है । जिसने स्त्री-पुरुष बनाये । रात्री तथा दिन की उत्पत्ति की। मानव जीवन निर्वाह के साधन एवं व्यवस्था की, वह पुरे संसार को ध्वस्त कर पुनर्निमाण नहीं कर सकता । इसी का नाम तो प्रलय है । फिर उसे नकारने का क्या औचित्य है ।

निश्चय ही निर्णय का दिन निश्चित है । (१८) जिस दिन नाद में फूँका जायेगा तुम समूहों में आजाओगे, (१९) और आकाश खोल दिया जायेगा तथा द्वार द्वार हो जायेगा, (२०) तथा पर्वत चला दिये जायेंगे एवं वह रेत हो जायेंगे । (२१) निश्चय ही नरक घात में है, (२२) दुराचारी का स्थान है । (२३) जिस में वह अनिश्चित युग तक रहेंगे । (२४) उस में शीत एवं पेय पदार्थ नहीं चखेंगे, (२५) किन्तु गर्म जल तथा पिव (२६) पूर्ण प्रतिफल । (२७) वह लेखा जोखा की आशा नहीं रखते थे, (२८) तथा हमारी आयतों (मंत्रों) को मिथ्या कहा । (२९) और प्रत्येक विषय को हमने लिख कर सुरक्षित कर लिया है, (३०) अतः चखो, हम तुम्हारा दन्ड ही बढ़ायेंगे। (३१)

भावार्थ:-

यहाँ से अल्लाह ने बताया है कि प्रलय का समय तथा दिन जो निर्णय का दिन होगा निश्चित है । जब सूर में फूँका जायेगा तो सभी जीवित होकर आजायेंगे। उस दिन सभी को उस के कर्म का प्रतिफल मिलेगा । कोई नरक में जायेगा । यह वही होगा जिसने प्रलय एवं परलोक में कर्मो के फल एवं तदानुसार फल भोगने पर विश्वास नहीं किया, तथा अल्लाह की आयतों को नकार दिया ।

निश्चय ही कृतज्ञों के लिये सफलता (३२) बाग एवं अंगूर हैं, (३३) तथा समायु कुमारियाँ, (३४) तथा छलकते प्याल । (३५) उसमें व्यर्थ एवं मिथ्या वचन नहीं सुनेंगे, (३६) तुम्हारें पालन हार की ओर से संपूर्ण [illegible] है, (३७)

भावार्थः-

यहाँ से अल्लाह ने सूचित किया है कि उस दिन वही सफल होंगे, जिन्होंने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया तथा यही सब प्रकार का सुख भोगेंगे ।

अकाश एवं पृथ्वी एवं इनके मध्य के पालनहार दयावान से कोई बात करने का साहस नहीं करेगा । (३८) जिस दिन जिबरील तथा रिश्ते पंक्तियों में खड़े होंगे। वही बात करेगा जिस को दयावान बात करने की अनुमति प्रदान करे, तथा वह सही बात करे । (३९) यह दिन निश्चित है । अतः जो चाहे अपने पालनहार की ओर ठिकाना बना ले । (४०) हमने तुम को निकटवर्ती दन्ड से सचेत कर दिया, जिस दिन इन्सान जो कर्म किया है देखेगा तथा कृतध्न कहेगा कि काश मैं धूल हो जाता! (४१)

भावार्थः-

इन आयतों में अल्लाह ने कहा है कि वह दयालु है किन्तु निर्णय के दिन वह न्याय करेगा तथा कोई उस से बात करने का साहस नहीं करेगा और उस दिन सही बात ही सुनी जायेगी । तथा यह उस की दया है कि उस दिन से सचेत करने के लिये अपने दूतों को भेजा तथा धर्मशास्त्र उतारे- ताकि इन्सान इस भूलोक में उसके विधान का पालन कर के परलोक में सफलता प्राप्त करे तथा उस के घोर दन्ड से मुक्त हो जाये एवं अपने शुभ कर्मो का शुभ फल भोगे ।

सूरतु न्नज़िआति

यह मक्की है इस में छियालीस आयतें, तथा दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से जो अतिदयावान एवं दयालु है । - शपथ है उन फरिस्तों की जो डूब कर प्राण खींचते हैं, (१) तथा जो सरलता पूर्वक प्राण निकालते हैं, (२) तथा जो तैरते हुये चलते हैं, (३) फिर तेज से दौड़ते हैं, (४) तथा जो कार्य की व्यवस्था करते हैं । (५) जिस दिन प्रलय हिलायेगी, (६) उस के पीछे उसके पश्चात की स्तिथि आयेगी । (७) बहुत से दिल उस दिन धड़कते होंगे, (८) उनकी आँखे नीची होंगी । (९) वह कहते हैं कि क्या हम फिर पहली स्थिति में लाये जायेंगे ? (१०) जब हम खोखली स्थियाँ हो जायेंगे ? (११) उन्होंने कहा कि तब यह घाटे का लौटना है ! (१२) निश्चय ही वह एक झिड़की होगी, (१३) तथा अकस्मात वह धरती के ऊपर होंगे । (१४)

भावार्थः-

इस सूरत में भी प्रलय ही के विषय को स्पष्ट किया गया है, कि प्रलय का समाँ तो यहाँ दर्शित हो जाता है जब किसी व्यक्ति के निधन का समय होते अल्लाह के फरिश्ते उस की आज्ञा का पालन करते हुये किसी का प्राण अति भीषणता से तथा किसी का सरलता से प्राण निकालते हैं और इस समय सभी विवश होकर रहजाते हैं अतः अल्लाह के फरिश्ते जो उस की आज्ञा का पालन करते सब कार्यो की व्यवस्था करते हैं, तो क्या वही अल्लाह इस विश्व को प्रलय कर फिर लय नहीं कर सकता! निश्चय ही वह दिन आयेगा तब जो प्रलय को नकारते हैं लज्जा के कारण आँखें ऊपर नहीं करेंगे तथा उन के दिल धड़कते रहेंगे, अल्लाह कहता है कि केवल उस का एक आदेश होते ही सभी धरती के ऊपर जीवित होकर आजायेंगे।

क्या तुम्हारे पास "मूसा" की कथा आई ? (१५) जब पवित्र क्षेत्र "त्वा" में उसके पालनहार ने पुकारा, (१६) फिऔर्न के पास जाओ, वह दुराचारी हो गया है। (१७) तथा उस से कहो कि क्या तुम पुनीत होना चाहते हो, (१८) तथा मैं तुमको तुम्हारे पालन हार का मार्ग बताऊँ तथा तुम डरो। (१९) तथा उसे भारी चिन्ह दिखाये। (२०) किन्तु उसने झुटाया एवं नहीं माना। (२१) फिर (उन के विरोध में) प्रयास करते पीठ फेर दिया। (२२) तथा एकत्रित किया एवं पुकारा। (२३) तथा कहा कि मैं तुम्हारा परम पालन हार हूँ। (२४) तो अल्लाह उसे लोक एवं परलोक के दण्ड में धर लिया। (२५) निश्चय ही इस में चेतना है उसके लिये जो डरता हो। (२६)

भावार्थ:-

इन आयतों (मंत्रो) से अल्लाह ने सूचित किया है कि इसी संसार में ईश दूत मूसा को नकारने पर मिश्र के राजा फिरऔन पर भीषण प्रकोप आया जिसने जनता को एकत्र कर अपने परम पालनहार होने का एलान किया और अपनी सेना समेत डूबा दिया गया तथा आज भी उस का शव पड़ा हुआ है। ताकि मानव गण यह जान लें की अल्लाह की आज्ञाँ को नकारने का क्या कुफल मिलता है तथा वही अल्लाह प्रलय भी करेगा।

क्या तुम्हारी उत्पत्ति कठिन है अथवा गगन की जिसे उस ने रचा है। (२७) उसकी छत ऊँची की, तथा चौरस किया, (२८) तथा उस की रात्री को अंधेरी एवं उसके दिन को प्रकाशमय किया, (२९) तत्पश्चात धरती को फैलाया। (३०) उससे जल एवं चारा निकाला, (३१) तथा पर्वतों की स्थापना की, (३२) तुम्हारे एवं तुम्हारे पशुओं के लाभ के लिये। (३३)

भाष्य:-

अल्लाह ही ने इस धरती एवं आकाश की रचना की है तथा रात्री दिन बनाये हैं एवं तुम्हारी आर्थिक व्यवस्था के साधन बनाये हैं, तो क्या वह इनको, प्रलय कर पुनः लय नहीं कर सकता ? फिर प्रलय के विषय में तुम्हें क्या सन्देह है। निश्चय ही एक दिन यह पूरा विश्व विलय एवं ध्वस्त हो जायेगा।

जब महारूज आयेगी ! (३४) उस दिन इन्सान अपने करतुत याद करेगा, (३५) तथा नरक सामने आजायेगी जिसका प्रत्येक व्यक्ति अवलोकन करेगा। (३६) तथा जिसने कुकर्म किया, (३७) तथा भौतिक जीवन को प्रथमित्ता दी, (३८) निश्चय ही उस का स्थान नरक है। (३९) किन्तु जो अपने पालन हार के सामने खड़ा होने से डरा, तथा मनको मनमानी करने से रोका, (४०) निश्चय ही उस का स्थान स्वर्ग है। (४१) वह प्रलय के संदर्भ में प्रश्न करते हैं कि उस की स्थापना कब होगी। (४२) उस की चर्चा में तुम क्युँ हो। (४३) उसका निश्चय तुम्हारे पालनहार के पास है। (४४) निश्चय ही तुम उसे सचेत करने के लिये हो जो उससे डरता हो। (४५) वह जिस दिन उसका दर्शन करेंगे तो ऐसा प्रतीत होगा कि वह संसार में एक संध्या अथवा प्रात) रहे हैं। (४६)

भावार्थ:-

इन पवित्र आयतों (मंत्रों) में अल्लाह ने कहा है जब प्रलय होगी तो प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मो का स्मरण करेगास क्युँकि परलोक में कर्मो का प्रतिफल मिलेगा,

जिसने धर्म का पालन किया होगा तथा अल्लाह के प्रति विश्वास रखा होगा कि एक दिन उसके सामने जाना है वह स्वर्ग का भागी होगा । तथा जिस ने माया मोह में फंस कर मन मानी किया होगा वह नरक में जायेगा किन्तु प्रलय कब होगी यह निश्चित करना ईश दूत का काम नहीं उस का काम मानव गण को मात्र सावधान करना है । उस का निश्चित ज्ञान मात्र अल्लाह को हैं । हाँ जब वह आयेगी तो संसारिक जीवन उस की अपेक्षा क्षण भर लगेगा ।

सूरह अबस

मक्की है , तथा इस में व्यालीस आयतें ,एवं एक रुकूअ है।

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं कृपालु है । उस (नराशंश) ने मुँह बिसोर लिया तथा फेर लिया, (१) कि उस के पास सूर आगया (२) तथा तुम्हें क्या पता संभवतः वह पवित्र होता, (३) अथवा निर्देश प्राप्त करता तथा वह उस के लिये लाभकारी होता, (४) किन्तु जो विमुख है, (५) तुम उस की चिन्ता करते हो । (६) एवं तुम पर कोई दोष नहीं यदि वह पवित्र नहो । (७) तथा जो तुम्हारे पास दौंड़ कर आता है , (८) तथा डरता है, (९) तुम उससे विमुख होते हो । (१०) कदापि ऐसा न करों यह (कुर्आन) एक स्मृति है । (११) जो चाहे इसे स्मरण करे । (१२) माननीय शास्त्र में सुरक्षित है । (१३) जो ऊँचा एवं पवित्र है । (१४) ऐसे लेखकों (स्वर्ग दूतों) के हाथों में है, (१५) जो महामान्य पुनीत हैं । (१६)

भावार्थः-

इस सूरह की इन आयतों में एक घटना की चर्चा की गई है जिसका विवरण इस प्रकार है कि एक बार कुरैश के पुरोहितों के साथ आप बातें कर रहे थे कि आप के एक अनुयायी अब्दुल्लाह पुत्र उम्मे मक्तूम ने आकर आप से कोई धार्मिक विषय में प्रश्न किया वह सूर थे । उनके हस्तक्षेप का नराशंस ने बुरा माना तथा मुँह फेर लिया। इस पर यह आयतें उतरीं तथा आप को चेतावनी दी गई कि आप ऐसा न करें क्युँकि कुरेश के प्रतिनिधि मूर्ति के पुजारी आप की बात पर ध्यान नहीं दे रहे थे । तथा यह सदाचारी सूर धर्म के विषय में उस पर कार्यरत होने के लिये आये थे फिर पवित्र कुर्आन का महत्व बताया गया है कि यह एक स्मृति है तथा फरिश्तों के हाथो में स्वर्ग में एक शास्त्र में सुरक्षित है ।

इन्सान का विनाश हो ! कितना कृतघ्न है! (१७) किस वस्तु से (अल्लाह ने) उसे पैदा किया है ? (१८) उसे वीर्य से पैदी किया तथा उस का स्वरूप बनाया, (१९) फिर (जन्म) मार्ग को सरल किया, (२०) फिर मौत दी, फिर समाधि में ले गया, (२१) फिर जब चाहेगा उसे पुनः जीवित करेगा । (२२) वस्तुतः उसने उस की आज्ञा का पालन नहीं किया । (२३) इन्सान को अपने भोजन की ओर देखना चाहिये, (२४) हमने धारा प्रवाह वर्षा की, (२५) फिर धरती को फाड़ा, (२६) फिर उसमें अन्न (२७) तथा अंगूर एवं तरकारी, (२८) तथा जैतून एवं खजूर (२९) तथा गुंजान बाग, (३०) एवं फल तथा वनस्पति उपजाई । (३१) तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लाभ के लिये । (३२)

भावार्थ:-

इन आयतों (मंत्रो) में अल्लाह ने इन्सान की कृतध्नता का वर्णन किया है कि यह मेरी ही महिमा है कि इन्सान वीर्य से व्यस्त से स्त कर दिया । उस का स्परूप बनाया फिर सरलता से गर्भाशय से संसार में पहुँचाया । फिर मृत्यु के पश्चात धरती को उस की समाधि के योग्य बनाया और जब चाहूँगा पुनर्जीवित करुँगा । अर्थात प्रलय के बाद फिर मैंने उस के जीवन के संसाधन बनाये । वर्षा की । धरती को फाड़ कर जीविका प्रदान की । अतः इन्सान को हमारे निर्देशो तथा सत्धर्म का पालन करना चाहिये। परन्तु इस से गंभीर कृतध्नता क्या होगी कि वह अपने विधाता तथा प्रलय को नकारता है एवम् मनमानी करता है ।

जब गुहार (प्रलय) आयेगी । (३३) उस दिन इन्सान अपने भाई से भागेगा, (३४) तथा अपनी माता एवं पिता से, (३५) एवं अपनी पत्नी तथा पुत्रों से । (३६) प्रत्येक व्यक्ति की उस दिन अपनी स्थिति उसे तत्पर रखेगी । (३७) उस दिन बहुत से मुखड़े उज्जवल होंगे, (३८) हंसते एवं प्रसन्न होंगे । (३९) तथा बहुत से मुखड़ों पर उस दिन कालिमा होगी । (४०) यही कृतध्न एवं दुराचारी होंगे । (४१)

भावार्थ:-

अल्लाह ने इन आयतों द्वारा सुचित किया है कि अल्लाह ने जिन्न तथा इन्सान को इसी लिये पैदी किया है कि वह सत्य धर्म तथा ईश्वरीय विधान का पालन करे तथा पवित्र जीवन निर्वाह करें क्युँ कि एक दिन प्रलय हो सब के कर्मो का लेखा जोखा प्रस्तुत किया जायेगा तथा उसी के अनुरूप वह सुख-दुःख भोगेगा तथा उस दिन कोई संबंधी किसी की सहायता नहीं कर सकेगा । अपने कर्मानुसार कोई स्वर्ग में कोई नरक में प्रवेश पायेगा ।

सूरह तक्वीर)

मक्की है, इस में उन्तीस आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं कृपाशील है । जब सूर्य लपेट दिया जायेगा। (१) जब तारे धुमिल हो जायेंगे, (२) तथा जब पर्वत चलाये जायेंगे । (३) जब दस महीने की गाभिन ऊँटनी छोड़ दी जायेगी । (४) जब बन पशु एकत्र कर दिये जायेंगे। (५) जब समुद्र भड़का दिये जायेंगे । (६) जब प्राण जोड़ दिये जायेंगे । (७) जब जीवित समाधी दी गई कन्या से प्रश्न किया जायेगा, (८) कि किस अपराध में हत की गई ? (९) तथा जब कर्म-पत्र फैला दिये जायेंगे, (१०) तथा जब गगन खुल जायेगा, (११) तथा जब नरक भड़काई जायेगी, (१२) तथा जब स्वर्ग निकट लाई जायेगी, (१३) तो प्रत्येक प्राणी जान लेगा कि क्या कर्म किया है । (१४)

भावार्थ:-

इन आयतों में प्रलय की भीषण घटना का चित्रण किया गया है कि सूर्य नहीं रह जायेगा । आकाश के तारे धुमिला जायेंगे । भारी पर्वत रुई के समान उड़ेंगे । उस दिन किसी को अपने धन - सम्पत्ति की चिन्ता नहीं रह जायेगी । अरब के निवासी अपना प्रिय धन जो दस महीने की गाभिन ऊँटनी होती है उसे भी कोई नहीं पूछेगा । बन पशु व्याप्त होकर नगरों में एकत्र हो जायेंगे । पुरा भूलोक जल थल बन जायेगा

तथा उस दिन जो कन्या को जन्म लेते जीवित समाधी देते हैं अथवा इस युग में गर्भपात कराते हैं उन से प्रश्न होगा कि उन का अपराध क्या था ? उस दिन सभी प्राणी को पुनर्जीवित कर उन की देह से प्राण जोड़ दिये जायेंगे तथा प्रत्येक को उसे कर्मानुसार प्रतिफल मिलेगा तथा वह स्वर्ग अथवा नरक में भेज दिया जायेगा । मैं शपथ लेता हूँ पूर्वगामी, (१५) स्थिर, अग्रगामी तारों की, (१६) तथा रात्रि की जब जाने लगे, (१७) तथा भोर की जब उदित हो जाये । (१८) यह (कुर्आन) एक मान्यवर स्वर्ग दुत द्वारा प्रस्तुत वचन है, (१९) जो शक्तिशाली सिन्हासन के स्वामी (अल्लाह) के यहाँ महान है, (२०) मान्य फिर न्यासिक है । (२१) तथा तुम्हारा साथी पागल नहीं है । (२२) उस (नराशंस) ने उसे क्षितिज में स्पष्ट रुप से देखा है । (२३) वह परोक्ष की बात बताने नें कृपण नहीं । (२४) तथा यह धिक्कारे शैतान का वचन नहीं है, (२५) फिर तुम कहाँ जा रहे हो । (२६) यह मात्र स्मृति है विश्व के निवासियों के लिये, (२७) तुममें से उसके लिये जो सीधा रहना चाहे । (२८) तथा तुम विश्व के पालनहार के चाहे बिना कुच्छ नहीं चाहोगे । (२९)

भावार्थ:-

इन आयतों में यह वर्णन है कि ईश बाणी कुर्आन अल्लाह ने स्वर्ग दूत के द्वारा जो अति सम्मानित है इस विश्व में अन्तिम दुत मुहम्मद (नराशंस) के पास भेजा है तथा स्वर्ग दुत ने बड़ी अमानतदारी से इस को पहुंचाया है, तथा महाईश दूत ने उसे उस के स्वरुप में क्षितिज में देखा है, अतः नराशंस कोई पागल नहीं हैं जैसा कि मूर्ति के पुजारी आरोप लगाते हैं । वह ईश्वरीय निर्देश प्रस्तुत कर रहे हैं । वह परोक्ष की बातें निःशुल्क बता रहे हैं । यह कोई राक्षस (कलि) का वचन नहीं । यह पुरे मानव जगत के लिये परमेश्वर की ओर से संमार्ग दर्शनि को भेजा गया है । किन्तु इसका लाभ उसी को मिलेगा जो स्वयं सिद्धि चाहता हो तथा उस पर परमेश्वर की दया हो।

सूरह इंफ़ितार

यह मक्की है, इस में उन्नीस मंत्र है ।

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं कृपाशील है ।

जब गगन फट जायेगा, (१) तथा जब तारे झड़ जायेंगे, (२) एवं जब सागर उबल पड़ेंगे, (३) तथा जब समाधियाँ उखाड़ दी जायेंगी, (४) तब प्रत्येक प्राणी को ज्ञान हो जायेगा जो किया जो नहीं किया। (५) हे इन्सान ! किस वस्तु ने तुझे तेरे परम पालनहार से धोखे में रखा है ? (६) जिसने तेरी उत्पत्ति की फिर तुझे संतुलित किया, (७) जिस रुप में चाहा बना दिया । (८) वास्तव में तू प्रतिफल के दिन को नकारता है, (९) एवं तुम पर संरक्षक हैं, (१०) आदरणीय लेखक हैं, (११) जो करते हो जानते हैं । (१२)

भावार्थ:-

यह आयतें भी प्रलय का चित्रण करती हैं कि कैसे संसार का विनाश होगा। फिर सब पुनर्जीवित किये जायेंगे एवं उसके कर्मानुसार प्रतिफल मिलेगा ।

जब अल्लाह ही ने इन्सान की उत्पत्ति की है तथा रुप - रेखा बनाई है जिसमें उसका कोई अधिकार नहीं, तो वह पुनः जीवित कर कर्मो का प्रतिफल नहीं दे सकता?

अल्लाह के फरिश्ते सभी के कर्मो को लिखने के लिये नियुक्त हैं ताकि उसके अनुसार प्रतिफल प्रदान किया जाये । अतः प्रलय तथा प्रतिफल को नकारना मात्र धोखा है । निस्सन्देह सदाचारी आनन्द में होंगे , (१३) तथा दुराचारी नरक में होंगे (१४) प्रतिफल के दिन उस में झोंक दिये जायेंगे । (१५) एवं उससे अनुपस्थित नहीं होंगे , (१६) तथा तुम क्या जानों कि प्रतिफल का दिन क्या है ! (१७) फिर तुम क्या जानों की प्रतिफल का दिन क्या है ! (१८) उस दिन किसी प्राणी का कोई अधिकार न होगा । तथा उस दिन अधिकार मात्र अल्लाह को होगा । (१९)

भावार्थ:-

प्रलये के पश्चात परलोक में जो धर्माचारी हैं वह सुख में होगें तथा धर्महीन नरक में प्रवेश पायेंगे ।

फिर अल्लाह ने सूचित किया है कि प्रतिफल का यह दिन अति भीषण दिन होगा जिस दिन मात्र अल्लाह का आदेश चलेगा,कोई किसी का सहायक न होगा ।

सूरह मुतफ्फ़ेफ़ीन

(यह मक्की है , इस में छत्तिस मंत्र हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं कृपाशील है ।

विनाश है ! कम नापने वालों के लिये । (१) जो लोगों से नाप करलें तो पूरा लें , (२) तथा जब नाप अथवा तौल कर दें तो कम दें । (३) क्या उनको विश्वास नहीं कि वह पुनर्जीवित किये जायेंगे , (४) एक महान दिवस के लिये , (५) जिस दिन सभी सर्वलोक के पालनहार के लिये खड़े होंगे । (६)

भावार्थ:-

इन आयतों में नाप - तौल में चोरी को घोर अपराध कहा गया है जो विनाशकारी पाप है तथा यह पाप वही करतें हैं जो परलोक तथा प्रतिफल मैं विश्वास नहीं रखतें।

इन आयतों में यह चेतावनी दी गई है कि इस घोर पाप का भी हिसाब होगा इसलिये नाप तौल में न्याय का पालन करों ।

कदापि यह न करो ! निस्सन्देह बुरों का कर्म-पत्र "सिज्जीन" में होगा । (७) तथा तुम "सिज्जीन" को क्या जानों (८)एक लिखित पंजिका है । (९) उस दिन झुटलाने वालों के लिये विनाश है , (१०) जो फल प्राप्ति के दिन को नकारते हैं । (११) तथा इसे असीम पापी ही नकारतें हैं । (१२) जब उनके समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहतें हैं कि पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं। (१३) ऐसा कदापि नहीं , बल्कि इनके कुकर्मो ने इनके दिलों पर मोरचा लगा दिया है । (१४) वस्तुतः यह उस दिन अपने पालनहार (के दर्शन) से रोक दिये जायेंगे । (१५) फिर वह नरक में प्रवेश करेंगे । (१६) फिर कहा जायेगा कि तुम इसी को झुटलाते थे (१७) ।

भावार्थ:-

इन आयतों (मंत्रो) में कहा गया है कि प्रत्येक प्राणी के कुकर्मो का पत्र तय्यार किया जा रहा है तथा उसे एक पंजिका में रखा जा रहा है जिस का नाम सिज्जीन है। इसमें उन का कर्म अंकित किया जाता है , जो पवित्र कुर्आन को नहीं मानते तथा कल्पित कथा कहते हैं । वास्तव में इस का कारण यह कि पाप के मोरचे ने इनका मन काला

कर दिया है । यही परलोक में अल्लाह का दर्शन नहीं कर पायेंगे तथा नरक में जायेंगे एवं तब उन्हें बताया जायेगा कि तुम इसी को नहीं मान रहे थे ।

कदापि ऐसा नहीं, आज्ञाँकारियों का कर्म पत्र "इल्लीईन" में है । (१८) तथा तुम क्या जानों कि इल्लीईन क्या है । (१९) एक लिखित पंजिका है । (२०) जिसके पास निकटवर्ती फ़रिश्ते रहते हैं । (२१) निश्चय आज्ञाँकारी सुख में रहेंगे । (२२) सिन्हासनों के ऊपर से दर्शन करेंगे । (२३) तुम उन के मुंखों में सुख की हरियाली प्रतीत कर लोगे । (२४) वह मुद्रित पेय पिलाये जायेंगे, (२५) जिस की मुद्रा कस्तूरी होगी, तथा आग्रही इसी में आग्रह करें । (२६)

भावार्थ:-

इन आयतों में सदाचारियों के कर्म-पत्र के स्थान तथा उन सुखों की चर्चा की गई है जिसे परलोक में भोगेंगे, तथा अल्लाह ने इसी आन्नद का आग्रह तथा इस के लिये प्रयास करने को उचित बताया है ।

सूरह इंशिक़ाक

(मक्की है, इसमें पचीस आयतें हैं।)

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं कृपालु है ।

जब आकाश फट जायेगा । (१) तथा अपने पालनहार की बात मानेगा एवं यह उस का दायित्व है । (२) तथा जब धरती फैला दी जायेगी, (३) एवं जो उस के भीतर है फेंक देगी और स्खलित हो जायेगी, (४) तथा अपने पालनहार की आज्ञां मानेगी एवं यह उस का दायित्व है । (५) हे मानव ! तू अपने पालनहार की ओर प्रयास कर रहा है तथा उससे अवश्य मिलेगा । (६) फिर जो दायें हाथ में कर्म-पत्र दिया जायेगा (७) उस का सरल हिसाब लिया जायेगा, (८) तथा अपनों में प्रसन्न होकर लौटेगा। (९) तथा जो अपना कर्म-पत्र बायें हाथ में पीठ - पीछे से दिया जायेगा, (१०) वह विनाश को पुकारेगा, (११) तथा नरक में जायेगा । (१२) यह अपनों में प्रसन्न था। (१३) उस ने सोचा था कि वापस नहीं आयेगा, (१४) क्युँ नहीं निश्चय तुम्हारा पालनहार उसे देख रहा था । (१५)

भावार्थ:-

इन आयतों में प्रलय का समय चित्रित किया गया है कि उस समय आकाश क्षिन्न, भिन्न हो जायेगा तथा धरती अपने सभी पदार्थ निकाल फेंकेगी । उस दिन परमेश्वर की यही आज्ञाँ होगी जिसका दोनों पालन करेंगे ।

फिर कहा गया है कि सभी प्राणी अल्लाह की ओर जा रहे हैं । तथा प्रत्येक क्षण अपनी मौत की ओर अग्रसर हैं एवं उन के कर्मो की पोथी तय्यार हो रही है जो प्रलय होने के पश्चात परलोक में उन के कर्मानुसार दायें अथवा बायें हाथ में मिलेगी। फिर सदाचारी अपने कर्म-पत्र प्रसन्नता पूर्वक भोगेगा तथा दुराचारी जिसने प्रलय में विश्वास नहीं रखा और मन मानी किया नरक का भागी होगा ।

मैं शपथ लेता हूँ ऊषा की, (१६) तथा रात्री की एवं जिसे एकत्र करे, (१७) तथा चाँद की जब पूर्ण हो जाये, (१८) तुम अवश्य एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाओगे । (१९) फिर क्युँ वह विश्वास नहीं करते, (२०) तथा जब उन के पास

कुआंन पढ़ा जाता है तो सजदा नहीं करते, (२१) अपितु कृतध्न ही झुटलाते हैं। (२२) एवं अल्लाह उन के विचारों से अवगत है। (२३) अतः उन्हें कष्टदायक दन्ड का समाचार सुना दो, (२४) किन्तु जो विश्वास किये तथा शुभ कर्म किये उन के लिये अनन्त फल है। (२५)

भावार्थ:-

जैसे सुर्यास्त के पश्चात अकाश में प्रथम लालिमा आती है, फिर घोर अन्धकार हो जाता है तथा सभी अपने स्थान ग्रहण कर लेते हैं अथवा जैसे चाँद की दशा पूरे महीने बदलती रहती है एवं एक समय पूर्ण हो जाता है। इसी प्रकार मनुष्य की दशा भी परिवर्तित होती है तथा एक दिन अपने निश्चित स्थान को धारण कर लेगा एवं परलोक में होगा। फिर वह प्रलय को क्युँ नहीं करता ? तथा जब उसको ग्रन्थ कुर्आन सुनाया जाता है तो मानता क्युं नकारता है ? क्या यह कोई असम्भव है कि इन्सान की दशा में परिवर्तन हो ? वस्तुतः कृतध्न ही इसे नहीं मानते। तथा अल्लाह इनके विचारों को जानता है। इन का स्थान नरक है। किन्तु जो सदाचारी एवं शुभकारी हैं उन के लिये परलोक में अनन्त सुख है।

सूरह बुरुज

मक्की है, तथा इस में बाईस आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो दयालु एवं कृपाशील है।

शपथ है नक्षत्रधारी आकाश की, (१) तथा वचन के दिन की, (२) तथा साक्षी एवं साक्षित दिवस की, (३) खांईयों अर्थात इंधन की अग्नि वालों का विनाश हो गया, (४) जब वह उन के पास आसन लगाये थे, (५) तथा विश्वासी जनों के साथ अपने कर्म (अत्याचार) देख रहे थे। (७) तथा उन में कोई दोष नहीं पाया किन्तु यह कि वह सर्व शक्तिमान प्रशस्त अल्लाह के प्रति विश्वास रखते थे, (८) जो आकाश तथा पृथ्वी का स्वामी है तथा अल्लाह सर्वज्ञ है। (९) जिन्होंने कृतज्ञ नर - नारियों को परीक्षा में डाला फिर क्षमा याचना नहीं की, उन के लिये नरक का दण्ड तथा दाह का दण्ड है। (१०)

भावार्थ:-

इस सूरह में एक नास्तिक राजा की कथा है जिसके गुरु एक ज्योतिषि ने उससे कहा कि मुझे एक बालक दो जिसे अपना तंत्र सिखा दूँ! नास्तिक राजा ने एक बालक को नियुक्त किया किन्तु उस के मार्ग में एक ईसाई साधू रहता था। वह बालक गुप्त रुप से उसी का धर्म सीखने लगा। एक दिन वह जा रहा था कि एक सिन्ह रास्ता रोके बैठा था तथा सभी राही परेशान थे। उस ने एक पत्थर लिया और यह कह कर चलाया कि हे अल्लाह! यदि साधू का धर्म सत्य है तो यह सिन्ह इस पत्थर से हत हो जाये, तथा पत्थर से वह सिन्ह हत हो गया फिर इस की चर्चा हुई और राजा ने उस बालक, उस के गुरु तथा अनुयाइयों को पकड़वाया और नगर में अग्नि कुन्ड बनाने एवं उन्हें उस में डालने का आदेश दिया। तथा राजा स्वयं अपने साथीयों को लेकर यह अत्याचार देख रहा था कि अकस्मात अग्नि की लपट ने राजा को उस के साथियों सहित घेर लिया एवं जलाकर भस्म कर दिया। इस प्रकार ज्योतिष तथा नक्षत्र के पुजारियों का विनाश

हो गया । तथा परलोक में भी उन के लिये अग्नि दण्ड है ।

निश्चय जो विश्वास किये एवम् शुभ कर्म किये उन के लिये बाग है जिन के नीचे जल प्रवाहित रहते हैं, यही बड़ी सफलता है । (११) निस्सन्देह तुम्हारे पालनहार की पकड़ कड़ी है । (१२) वही लय एवं प्रलय करता है । (१३) वह अति क्षमाशील प्रेमी है, (१४) महा सिन्हासन का स्वामी है, (१५) जो चाहता है करता है । (१६) क्या तुम्हारे पास सेनाओं की सूचना आई ? (१७) अर्थात फ़िरऔन एवं समूद की? (१८) बल्कि कृतधन झुटलाने में तत्पर हैं । (१९) एवं अल्लाह उनके पीछे से घेर रहा है । (२०) बल्कि वह मान्य क़ुर्आन है । (२१) सुरक्षित शास्त्र में है (२२) ।

भावार्थ:-

इन आयतों में सूचित किया गया है कि अल्लाह के प्रति पूर्ण विश्वास तथा उस की आज्ञाँनुसार कर्म ही से परलोक में सुफल होगा एवं जो उस के विधान का उल्लन्घन करते हैं वह उन्हें दन्डित करने का सामर्थ्य रखता है । क्युँ कि उत्पत्ति कर्ता वही है तथा प्रलय के पश्चात वह सब को पुनर्जीवित कर एकत्र कर देगा । वह क्षमा भी करता है तथा प्रेम भी । इससे पूर्व उसने दो वर्गों फ़िरऔन तथा समूद को दन्डित किया । फिर भी जो धर्महीन हैं वह सभी यथार्ता को नकारते हैं तथा दन्डनीय बन रहे हैं । वह यह नहीं जानते कि अल्लाह सर्वज्ञ है ।

फिर क़ुर्आन के विषय में बताया गया कि यह एक महान धर्म शास्त्र है जो देवलोक में अल्लाह के पास लिखित एवं सुरक्षित है । इसे अन्तिम महाईश - दूत नराशंस के द्वारा मानव जगत के लिये प्रस्तुत किया गया है ताकि उस के अनुसार जीवन यापन कर के लोग परलोक में सफलता प्राप्त करें ।

सूरह त़ारिक़ि

यह मक्की है, इस में सतरह आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं कृपाशील है ।

आकाश तथा रात्री में उदित की शपथ है. (१) तथा तुम क्या जानों कि रात्री में क्या उदित होता है ! (२) ज्योतिमय तारा । (३) निश्चय प्रत्येक प्राणी पर एक संरक्षक है । (४) इन्सान को सोचना चाहिये कि वह किस वस्तु से पैदा किया गया है । (५) उछलते जल (वीर्य) से, (६) जो पीठ एवं वक्ष के मध्य से निकलता है । (७) निश्चय वह उसे लौटाने में समर्थ है । (८) जिस दिन भेद खोल दिये जायेंगे, (९) तो उसे न कोई शक्ति होगी न कोई सहयोगी (१०) ।

भावार्थ:-

इन आयतों में उदाहरणार्थ तारों को प्रस्तुत करके यह बताया गया है कि जैसे ग्रहें सदा आकाश में रहते हैं तथा रात्री में प्रकाशित होते हैं इसी प्रकार इन्सान पैदा होता फिर मर जाता है तथा प्रलय के पश्चात परलोक में पुनर्जीवित होगा । तथा जिस अल्लाह ने इन्सान को पानी (वीर्य) की बूँद से जो नर की पीठ तथा नारी के वक्ष स्थल से कूद कर निकलता है व्यस्त से स्त किया है । उसे पुनर्जीवित नहीं कर सकता ? यह कोई असम्भव नहीं । अल्लाह प्रलय के पश्चात सब को पुनर्जीवित करेगा तथा सब के कर्म तथा मन के विचार को प्रकाश में लायेगा एवं तदानुसार उस का प्रतिफल

देगा । उस दिन कोई न तो स्वयं अपनी सहायता कर पायेगा न कोई उस का सहायक होगा । संरक्षक फ़रिश्ते कर्म - पत्र लिखने के लिये नियुक्त हैं तथा सर्वज्ञ परमेश्वर सब के मन की भावना जानता है और उसीसे उसके सुख दुःख का निर्णय होगा ।

तथा आकाश की शपथ जो लौटता है, (११) तथा धरती की जो फट जाती है, (१२) यह एक निर्णायक वचन है, (१३) यह हास्य नहीं । (१४) वह चाल, चलते हैं (१५) तथा मैं भी उपाय करता हूँ । तो कृतघ्नों को कुच्छ अवसर दे दो । (१६)

भावार्थ:-

इन आयतों में आकाश तथा धरती को उदारणार्थ प्रस्तुत किया गया है कि जैसे आकाश से पुनः पुनः वर्षा होकर धरती फटकर अन्न, पेड़ - पौधे उत्पन्न होते हैं इसी प्रकार सभी प्राणी को धरती फाड़कर पुनः जीवित कर देना कोई हास्य पद नहीं है । यह अल्लाह का निर्णायक वचन है । फिर भी अधर्मी इसे नकारने के लिये बातें बनाते हैं तथा अल्लाह ने भी उन को दन्डित करन की योजना तय्यार की है । अतः हे नराशंस ! तुम इन की बातों की चिन्ता न करो इन्हें कुच्छ अवसर दे दो । इन्हें धरना हमारा काम है ।

सूरह आड़ला

(यह मक्की है । इस में नौ आयतें हैं।)

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं कृपालु है ।

अपने परम पालनहार के नाम की पवित्रता का वर्णन कर, (१) जिसने पैदा किया तथा रूप रेखा बनाई, (२) तथा जिसने अनुमान किया फिर मार्ग दर्शाया, (३) एवं जिसने चारा निकाला (४) फिर उसे काला कूड़ा कर दिया। (५) हम तुम को पढ़ायेंगे जिसे तुम नहीं भूलोगे, (६) किन्तु जो अल्लाह चाहे निश्चय ही वह खुले तथा गुप्त को जानता है । (७) तथा हम तुमको सरलता प्रदान करेंगे । (८) तुम स्मरण करावो यदि स्मरण से लाभ हो । (९) वह स्मरण करेगा जो अल्लाह से डरता हो, (१०) तथा इस से वही दूर रहेगा जो दुर्भागा हो, (११) जो भारी अग्नि में प्रवेश करेगा । (१२) फिर उस में न मरेगा न जीवित रहेगा । (१३)

भावार्थ:-

इन आयतों में मानव गण को निर्देश किया गाय है कि अल्लाह के नाम की पवित्रता का वर्णन करें । इस लिये कि वही इस विश्व तथा मानव जात का रचयिता है । उसी ने सब की रूप रेखा बनाई तथा अपने दूतों द्वारा सत्य मार्ग दर्शाया, तथा उस ने जिस प्रकार चारा पैदा किया फिर उसे भूसा कर दिया ऐसे ही इस भूलोक का अन्त भी प्रलय है ।

आगामी आयतों में उस ने अन्तिम दूत नराशंस को सूचित किया है कि यह पवित्र क़ुर्आन हम आप के मन में सुरक्षित कर देंगे हम सर्वज्ञ हैं तथा आप को सुविधा प्रदान करेंगे । अतः आप इसे मानव जगत को सुनायें जो संयमी है । वह इस से लाभ उठायेगा । किन्तु जो हतभागी है वह इसे नकार कर नरक में प्रवेश पायेगा ।

वह सफल हो गया जो पवित्र हो गया (१४) तथा अपने पालनहार का नाम

लिया फिर नमाज़ अदा की (१५) अपितु तुम भौतिक जीवन को प्राथमिक्ता देते हो (१६) तथा परलोक उत्तम एवं स्थायी है (१७) यही बात आदि ग्रन्थों (१८) इबराहीम तथा मूसा के ग्रन्थों में है । (१९)

भावार्थ:-

इन आयतों में कहा गया है कि अपने मन को शुद्ध करने एवं सत्य धर्म का पालन करने और अल्लाह का नाम लेकर उस की अराधना उपासना करने ही में परलोक की सफलता है तथा परलोक का सुख ही स्थायी है तथा इस संसार का सुख क्षणिक है । अतः परलोक में सफलता के लिये सदाचरण करो । इस माया मोह में न पड़ो। यह बात मात्र क़ुर्आन नहीं कहता आदि धर्म शास्त्रों में भी यही कहा गया है जिन में ईश दूत इबराहीम तथा मूसा पर उतारे गयें ग्रन्थ शामिल हैं ।

सूरह ग़ाशियति

(यह सूरः मक्की है, तथा इसमें २७ आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो दयालु एवं कृपाशील है ।

क्या तुम्हारे पास सार्वजनिक दुर्घटना का समाचार आया? (१) उस दिन अनेक मुख लज्जित होंगे (२) दुखी तथा थके होंगे (३) धधकती आग में प्रवेश करेंगे, (४) खौलते स्त्रोत से पिलाये जायेंगे । (५) उन का भोजन थूहड़ (एक कटीला फल) होगा (६) जो न मोटा करेगा न क्षुधा दूर करेगा । (७)

भावार्थ:-

सार्वजनिक दुर्घटना प्रलय ही का नाम है । इसलिये कि यह सब पर छा जायेगी। उस दिन प्रत्येक इन्सान को अपने कर्म का फल भोगना होगा । जिसने धर्म का विरोध किया एवं पाप में लीन रहा उसे लज्जित होना पड़ेगा तथा उस के कुकर्मो का फल धधकती आग एवं खौलते जल के रुप में मिलेगा ।

तथा अनेक मुख उस दिन प्रसन्न होंगे, (८) अपने प्रयास के कारण प्रसन्न होंगे, (९) वह ऊँचे बाग में रहेंगे, (१०) उस में बक्वाद नहीं सुनेंगे । (११) उस में प्रवाहित झरने होंगे, (१२) उसमें ऊँचे सिन्हासन होंगे, (१३) तथा प्याले रखे होंगे, (१४) तथा गालीचे लगे होंगे, (१५) एवं कालीन फैली होंगी । (१६)

भावार्थ:-

उपरोक्त दुराचारियों के विपरीत ऐसे व्यक्ति भी होंगे जो धर्माचारी होंगे और सब प्रकार का सुख भोगेंगे तथा स्वर्ग में निवास करेंगे ।

क्या वह ऊँट को नहीं देखते कि कैसा पैदा किया गाय है ? (१७) और आकाश को कि कितना ऊँचा किया गया है ? (१८) एवं पर्वतों को कि कैसे स्थापित किये गये ? (१९) तथा धरती को कि कैसे प्रसारित की गई है ? (२०) अतः तुम उपदेश दो; तुम मात्र उपदेशक हो । (२१) तुम उन पर अधिकारी नहीं हो; हाँ, जिसने मुँह फेरा तथा नहीं माना, (२२) तो अल्लाह उसे घोर दण्ड देगा । (२३) निश्चय उन को हमारे पास ही लौटकर आना है, (२४) फिर हम्हीं को उन का हिसाब लेना है । (२६)

भावार्थ:-

इन आयतों में विशेष रूप से चार वस्तुओं की चर्चा इस लिये की गई है कि

क़ुर्आन को सावधान करने तथा समार्ग दर्शाने हेतु इस महादूत नराशंस के द्वारा भेजा है जिनका दायित्व मात्र सावधान करना है । अब जो इसे न माने उसे इस भूलोक से अल्लाह के पास जाना है तथा अपने कर्म का प्रतिफल भोगना है ।

सूरतुल फ़ज्रे

यह मक्की है, तथा इसमें तीस आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं कृपाशील है ।

भोर की शपथ है, (१) तथा दस रात्री की, (२) एवं जोड़े तथा अकेले की, (३) तथा रात्री की जब जाने लगे । (४) क्या तुमनें नहीं देखा कि तुम्हारे पालनहार ने "आद" के साथ क्या किया ? (६) जो एरम कहलाते थे ? (७) कि जिन के समान अतिकाय देश में नहीं पैदा किये गये थे । (८) तथा "समूद" के साथ जो वादी (कुरा) में पत्थर काट कर घर बनातें थे; (९) तथा फ़िरऔन के साथ जो खूँटी धारी था ? (१०) यह देशों में दुराचारी हो रहे थे, (११) तथा उन में बहुत बिगाड़ कर रहे थे, (१२) तो तुम्हारे पालनहार ने उन पर दन्ड के कोड़े बरसा दिये, (१३) निश्चय तुम्हारा पालनहार घात में है । (१४)

भावार्थ:-

इन आयतों में कुछ पवित्र समय तथा दिनों की चर्चा कर आगामी बातों पर बल दिया गया है । इस लिये कि सदाचारी धार्मिक पुरुष इन में अल्लाह की उपासना करते हैं । जैसे प्रातः भोर का समय तथा दस रात्री जो हज के महीने के प्रथम दशक की होती है जिन में अल्लाह की अराधना का बड़ा महत्व है । फिर हज के महीने की नवमी का दिन जो "अरफ़ात" का दिन है फिर दशमी जो क़ुर्बानी का दिन है । फिर रात्री के व्यतीत होने का समय, किन्तु धर्महीन इनका कुप्रयोग कर विनाश के भागी होते हैं तथा इसी भुलोक में विनाश को भोगते हैं जैसे "आद" समूद तथा फ़िरऔन यह तीनों वर्ग अपने दुराचारों के कारण दन्डित किये गये । यह बड़े बलवान, शिल्पकार तथा प्रभावी थे एवं आज भी उन के अवशेष "क़ाहिरा" तुर्की तथा शाम में पाये जाते हैं । और यह दन्ड मात्र उन्हीं के लिये नहीं , अल्लाह घात में रहता है तथा दुराचारियों को इसी संसार में ध्वस्त कर देता है ।

फिर जब अल्लाह इन्सान की परीक्षा करता है, उसे मान तथा धन देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा आदर किया ! (१५) तथा जब उस की परीक्षा करता है कि उस की जीविका कम कर देता है, तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा अपमान कर दिया । (१६) ऐसा नहीं हैं, अपितु तुम अनाथ का आदर नहीं करते, (१७) तथा दीन को भोजन देने के लिये नहीं उभारते, (१८) एवम् उत्तराधिकार के धन को समेट कर खा जाते हो, (१९) तथा धन से बड़ा प्रेम रखते हो । (२०)

भावार्थ:-

इन आयतों में इस विचार का खन्डन किया गया है कि अल्लाह किसी को धन तथा मान प्रेम के कारण नहीं देता है अपितु वह धन मात्र परीक्षा के लिये देता है कि कौन उपकार करता है तथा उस की आज्ञा का पालन करता है ।

फिर कहा गया है अल्लाह [illegible] को अनाथ तथा दीन के साथ उपकार

के लिये देता है किन्तु तुम धन के लोभ में अनाथ तथा गरीब का अपमान करते हो तुम उत्तराधिकार का धन भी हड़प कर जाते हो ।

तो जब भूमि कूट पीट कर चौरस कर दी जायेगी, (२१) तथा तेरा पालनहार एवं फ़रिश्ते पंक्तियों में उपस्थित हो जायेंगे । (२२) और उस दिन नरक सामने लाई जायेगी, तो इन्सान उस दिन सावधान हो जायेगा किन्तु सावधानी से उस दिन कोई लाभ न होगा । (२३) वह कहेगा काश ! मैं अपने सदा के जीवन के लिये कर्म किये होता ! तो उस दिन कोई न अल्लाह के दण्ड के समान दण्ड देगा, (२५) न कोई वैसी जकड़ जकड़ेगा । (२६) हे शान्त आत्मा ! (२७) अपने पालन हार की ओर चल; तू उससे प्रसन्न वह तुझसे प्रसन्न । (२८) तू मेरे भक्तों में प्रवेश कर जा, (२९) तथा मेरी स्वर्ग में प्रवेश करजा । (३०)

भावार्थ:-

इन आयतों में सूचित किया गया है कि प्रलय के दिन धरती खंड - खंड कर दी जायेगी फिर अल्लाह सब को जीवित करके उन का हिसाब लेगा । फ़रिश्ते पंक्तियों में उपस्थित होंगे तथा नरक सामने होगी । उस दिन प्रत्येक पुरुष यह कामना करेगा कि वह संसार में सदाचार किये होता किन्तु यह चेतना उस के काम नहीं आयेगी वह अपने किये का फल पायेगा ।

अन्त में कहा गया है कि जब सदाचारियों का अन्तिम समय होता है तो यम उसका प्राण सरलता से निकालते हैं तथा कहते हैं कि हे शान्त आत्मा ! अल्लाह की ओर चल तथा उसके भक्तों एवं उस की स्वर्ग में प्रवेश कर ।

सूरह बलदि

मक्की है, इसमें बीस आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं कृपाशील है ।

हमें इस नगर (मक्का) की शपथ, (१) तथा तुम इसी नगर में तो निवास करते हो। (२) एवं पिता (आदिम्) एवं उन की संतान की शपथ है, (३) कि हमने इन्सान को व्यथा में पैदा किया है । (४) क्या वह सोचता है कि उस पर कोई वश न पायेगा । (५) वह कहता है कि मैंने बड़ा नाश किया । (६) क्या वह सोचता है कि किसी ने उसे देखा नहीं । (७) भला हमने उसे दो आँखे नहीं दीं, (८) तथा जिहवा और दो होंट ? (९) एवं उसे दोनों मार्ग दिखा दिये । (१०)

भावार्थ:-

प्रारम्भिक आयतों में मक्का नगर का महत्व प्रस्तुत किया गया है जिस में अन्तिम महाईश दूत नराशंस पैदा हुये एवं निवास किया । इस आयत का एक अर्थ यह भी किया गया कि मक्का नगरी जिस में युद्ध सदा के लिये निषेध है मात्र कुच्छ क्षण के लिये तुमको अर्थात नराशंस को युद्ध करने की अनुमति प्रदान की गई है । फिर वास्तव में यही अयोध्या है फिर पिता "आदिमनु" तथा उन की संतान पूरे मानव गण का महत्व दिखाया गया जिन को अल्लाह ने अपनी अराधना के लिये पैदा किया है । यह मानव जाति बड़ी व्यथा में जीवन निर्वाह करता है । वह धन की लालसा में रहता है । उसी पर गर्व करता है जब कि उस का दायित्व अल्लाह की उपासना एवं

सत्य धर्म का पालन करना है । वह संसार में स्वयं को स्वतंत्र समझता है । वह सोचता है कि जैसे हो धन प्राप्त करुँ तथा मन मानी व्यय करुँ उस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं। अल्लाह कहता है वह तुम्हारा आचरण देख रहा है । उसी ने तुम को देखने के लिये दो आँखें बोलने के लिये जिह्वा तथा दो होंट दिये है फिर अपने दूतों तथा शास्त्रों द्वारा भला - बुरा दोनों बता दिया है । इस लिये कि सत्य का पालन करों ।

किन्तु वह घाटी में नहीं घुसा । (११) तथा तुम क्या जानो कि घाटी क्या है । (१२) दास को मुक्त करना, (१३) अथवा भूख के दिन भोजन देना । (१४) अनाथ संबन्धी को, (१५) अथवा धूलमें पड़े भिखारी को । (१६) फिर उन में होना जो विश्वास किये तथा सहनशीलता का उपदेश करते रहे और परोपकार का उपदेश करते रहे । (१७) यही भाग्यवान है । (१८) एवं जो हमारी आयतों को नहीं माने वह हतभाग्य हैं । (१९) यही नरक के बन्दी रहेंगे । (२०)

भावार्थ:-

इन आयतों में अल्लाह ने कहा है कि अपने स्वार्थ के लिये मन मानी धन व्यय करना गर्व की बात नहीं, वास्तव में किसी दास को अपने धन से स्वतंत्र करा देना भूखे अनाथ तथा निर्धन को भोजन कराना बड़ा काम है । वह भी मात्र अल्लाह के लिये उसीके प्रति पूर्ण विश्वास के साथ, फिर सहनशीलता एवं उपकार का उपदेश करना परम पुण्य है तथा ऐसे ही व्यक्ति भाग्यवान हैं और जो इसके विपरीत कर्म करते हैं वह हतभागे एवं नरक के भागी हैं ।

सूरह शम्सि

(मक्की है, इसमें पन्द्रह आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं दयावान है ।

सूर्य की शपथ एवं उस के प्रकाश की, (१) तथा चाँद की जब उस के पीछे आये; (२) एवं दिन की जब उसे प्रकाशित कर दे, (३) एवं रात्री की जब उस को छुपाले; (४) एवं आकाश की तथा जिस (अल्लाह) ने उसे बनाया, (५) एवं धरती की तथा जिसने उसे फैलाया, (६) एवं इन्सान की तथा जिसने उसे सीधा बनाया; (७) फिर उसे पाप एवं पुण्य का विवेक दिया । (८) वह सफल हो गया जिसने अपनी आत्मा को शुद्ध कर लिया, (९) एवं वह घाटे में रहा जिसने उसे (पाप में) धँसा दिया । (१०)

भावार्थ:-

इन आयतों में रात्री एवं दिन की जिसमें इन्सान पुण्य तथा पाप करता है चर्चा के पश्चात आकाश एवं धरती तथा इन्सान और इन सब के रचयिता अल्लाह की महिमा का वर्णन किया गया है कि उसने न केवल इस विश्व को रचा है अपितु उसी ने इन्सान को पैदा किया है और उसे पाप - पुण्य का विवेक दिया है ताकि अपनी आत्मा को दैवी गुणों द्वारा शुद्ध कर दोनों लोक में सफलता प्राप्त करे तथा पाप में लीन होकर परलोक में घाटे में न रहे ।

"समूद" ने अपने दुराचार के कारण (ईश . को) झुटलाया । (११) जब उन में का एख हतभागा तैयार हुआ, (१२) तब अल्लाह के दूत "सालेह" ने कहा कि अल्लाह की ऊँटनी तथा उसके जल पान से सावधान रहो । (१३) किन्तु उन्होंने

उनको झुटलाया ,एवं उसके पग काट दिये; फिर उन पर उनके पालनहार ने उनके पाप के कारण प्रकोप उतारा और उन को चौरस कर दिया । (१४) और उसे इनके बदला लेने का कोई भय नहीं । (१५)

भावार्थ:-

इन आयतों में उदाहरणार्थ अल्लाह ने एक प्राची वर्ग "समूद" के विनाश की चर्चा की है ।

समूद ने अपने ईशदूत सालेह से कहा कि यदि इस पर्वत से एक गाभिन ऊँटनी निकले तो हम तुम्हारी बात मान लेंगे । उन्होंने अल्लाह से प्रार्थना की और पर्वत फटकर एक ऊँटनी निकली फिर भी उनकी बात न माने । ईश - दूत ने उन्हें सावधान किया कि इसके पानी पीने में बाधा न उत्पन्न करना किन्तु यह बात भी न माने और एक दुष्ट को जिस का नाम "कुदार" था ऊँटनी को हत करने हेतु ललकारा तथा उसे हत कर दिया जिसके कारण अल्लाह का प्रकोप आया एवं इस वर्ग (समूद) का पूर्णतः विनाश कर दिया गया ।

सूरतु ल्लैलि

(मक्की है जिस में एक्कीस आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो दयालु एवं कृपाशील है ।

रात्री की शपथ जब छा जाये, (१) एवं दिन की जब प्रकाशित हो जाये, (२) एवं उस की जिसने नर - नारी पैदा किये । (३) कि तुम्हारे प्रयत्न विभिन्न हैं। (४) फिर जिसने दान दिया एवं भक्ति की, (५) एवं शुभ सूत्र को स्वीकार किया, (६) हम उस के लिये सुविधा अर्थात स्वर्ग का मार्ग सरल कर देंगे । (७) एवं जिसने कृपण किया और ध्यान नहीं दिया, (८) एवं शुभ सूत्र अर्थात लाएलाह इल्लल्लाह को झूठ समझा, (९) हम उसके लिये कष्ट अर्थात नरक का मार्ग सरल कर देंगे । (१०) तथा जब वह (नरक में) गिर जायेगा तो उस का धन उस के काम न आयेगा। (११)

भावार्थ:-

इन आयतों में रात्री एवं दिन का जिस में इन्सान प्रयत्न करता है महत्व प्रस्तुत करते हूये कहा गया है कि प्रत्येक इन्सान का प्रयत्न विभिन्न होता है कोई अल्लाह की आज्ञा के आधीन रह कर प्रयास करता एवं अल्लाह के प्रति विश्वास रखता है और धर्म सूत्र लाएलाह इल्लल्लाह अर्थात अल्लाह के सिवाय कोई पुज्य नहीं को मानता है तो अल्लाह उस के लिये स्वर्ग में प्रवेश के कर्मों को आसान कर देता है तथा जो कृपण होता है एवं धर्मसूत्र को नहीं मानता वह नरक में प्रवेश के मार्ग पर चला जाता है और जब नरक में गिर जायेगा तो उस का धन उसे नहीं बचा पायेगा ।

हम को तो मार्ग दर्शादिना है । (१२) एवं आलोक - परलोक हमारा ही है;। (१३) हमने तुमको भड़कती आग से सावधान कर दिया । (१४) जिस में बड़ा हतभागा ही प्रवेश करेगा, (१५) जिसने झुटलाया एवं मुँह फेरा । (१६) एवं संयमी उससे बचा लिया जायेगा । (१७) जो अपना धन दान करता है कि पवित्र हो जाये । (१८) वह किसी के प्रत्युपकार के लिये नहीं देता । (१९) किन्तु अल्लाह की प्रसंन्नता प्राप्त करने

के लिये देता है । (२०) एवं वह प्रसन्न हो जायेगा । (२१)

भावार्थ:-

इन आयतों में अल्लाह ने कहा है कि हमारा काम सत्योसत्य को दर्शा देना है तथा हमने अपने शास्त्र द्वारा तुम्हीं सत्य मार्ग दिखा दिया आलोक परलोक दोनों हमारा है एक को हमने कर्म के लिये एवं दुसरे को प्रतिफल प्रदान करने के लिये बनाया है, हमनें अपने शास्त्र कुर्आन एवं अपने अन्तिम दूत नराशंस के द्वारा तुम्हें नरक से सावधान कर दिया, अब बड़ा हतभागा ही नरक में जायेगा जो इस शास्त्र तथा ईश दूत को नहीं मानेगा और उनसे मुँह फेर लेगा - एवं जो भक्त, सदाचारी एवं उपकारी होगा, वह नरक से सुरक्षित रखा जायेगा जो अल्लाह के लिये सत्कार करता हो, और अल्लाह ऐसे सज्जन से खुश होकर उसे स्वर्ग प्रदान करेगा ।

सूरह ज़ुहा

(मक्की है, इसमें ग्यारह आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं कृपाशील है ।

शपथ है सूर्य के प्रकाश की, (१) एवं रात्री की जब छा जाये, (२) आप के पोषक ने न आप को छोड़ा है न बैररखा है । (३) एवं परलोक आप के लिये लोक से उत्तम है। (४) एवं आप का पोषक आप को वह देगा कि आप ख़ुश हो जायेंगे । (५) क्या आप को अनाथ नहीं पाया और शरण दी? (६) एवं आप को अज्ञान पाया तो सत्य मार्ग दिखाया । (७) एवं निर्धन पाया तो आप को धनी कर दिया, (८) तो आप भी अनाथ को न दबायें । (९) एवं भिक्षुक को न डाँटें । (१०) एवं अपने पोषक के वरदान का वर्णन करें । (११)

भावार्थ:-

कुछ दिन अन्तिम ईश्दूत नराशंस (मुहम्मद) पर अल्लाह की ओर से कोई उपदेश नहीं आया जिससे आप चिन्तित रहने लगे, तत्पश्चात यह सूरह उतरी कि प्रकाशित दिन हो अथवा अंधेरी रात किसी क्षण भी आप के पोषक अल्लाह ने आप को नहीं छोड़ा है एवं आगामी समय आप के लिये वर्तमान से उत्तम होगा, आप पर अल्लाह की इतनी कृपा होगी कि आप खुश हो जायेंगे, केवल दुतत्व के पश्चात ही नहीं जब से आप पैदा हुये अल्लाह ने आप की सुरक्षा की है आप अनाथ पैदा हुये, गर्भ में थे तभी आप के पिता अब्दुल्लाह (विष्णु यश) का निधन हो गया तो आप के दादा फिर चचा से आप का पालन पोषण कराया एवं जब आप अनभिज्ञ थे तो आप को अपना दूत निर्वाचित कर आप को सत्धर्म का ज्ञान दिया आप निर्धन थे तो आप को संतुष्ट किया अतः आप भी अनाथ एवं निर्धन भिक्षुक के साथ उपकार करते रहें तथा अल्लाह ने आप पर जो वरदान किया है अर्थात आपको उपदेशक बनाया है, आप उस के उपदेश एवं सत्य धर्म का प्रचार करते रहिये ।

सूरह अलम् नश्रह

(मक्की है, इस में आठ आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो दयावान एवं कृपाशील है ।

क्या हमनें आप का हृदय खोल नहीं दिया ? (१) एवं आप का बोझ उतार दिया, (२) जिसने आप की पीठ तोड़ दी, (३) एवं आप की ऊँची चर्चा की । (४) निश्चय कठिनाई के साथ सरलता से, (५) निस्सन्देह कठिनाई के साथ सुविधा है । (६) अतः जब अवकाश मिले तो आप अराधना में प्रयास करें, (७) एवं अपने पालनहार की ओर ध्यान करें, (८)

भावार्थः-

इस सूरह में अल्लाह ने अपने प्रियवर नराशंस "मुहम्मद" (उन पर अल्लाह की दया एवं शान्ति हो) पर अपने विशेष वरदानों का वर्णन करते हुये आपको अपनी अराधना एवं उपासना का आदेश दिया है कि उसने आप को सर्वप्रथम धर्म का ज्ञान दिया एवं उस के प्रचार प्रसार का साहस दिया और सभी विघ्नों को दूर किया एवं आप का नाम ऊँचा कर दिया, नमाज के लिये दिन रात में पाँच समय अजान में आप का नाम पुकारा जाता "अश्हदुअन्न मुहम्मदर्रसूल्लल्लाह " अर्थात मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के दूत हैं इसी प्रकार इस्लाम के धर्म सूत्र "लाएलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह अर्थात अल्लाह के सिवाय कोई पुज्य नहीं, मुहम्मद (उन पर अल्लाह की दया एवं शान्ति हो) अल्लाह के सन्देश वाहक हैं में भी आप का शुभनाम आता है ।

तत्पश्चात अल्लाह ने एक नियम का वर्णन किया है कि प्रत्येक कठिनाई का अन्त सुविधा है अतः कठिनाई में साहस नहीं खोना चाहिये फिर फरमाया है कि हे नराशंस जब भी आपको धर्म के प्रचार प्रसार से समय मिले तो अल्लाह की उपासना में ध्यान मग्न हो जाईये ।

सूरह वत्तीनि

(यह सूरह मक्की है, इसमें आठ आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपायतन तथा कृपाशील है ।

शपथ है इंजीर एवं ज़ैतून की, (१) एवं सिना के पर्वत तूर की, (२) एवं इस शान्ति नगर की, (३) हमने इंसान को मनोहर रुप में पैदा किया । (४) फिर उसे सबसे नीचे कर दिय; (५) किन्तु जो विश्वास एवं सदाचार किये उन्हीं के लिये अनन्त प्रतिफल है । (६) फिर तुम प्रति फल के दिन को क्युँ झुटलाते हो ? (७) क्या अल्लाह सब अधिपतियों का अधिपति सही हैं ? (८)

भावार्थः-

सर्व प्रथम इस सूरह में इंजीर एवं जैतून फिर तूर पर्वत और अन्त में शान्ति के नगर का महत्व दिखाया गया है क्युँकि इन पवित्र स्थानों एवं नगरों में ईश दूत पैदा हूये इंजीर एवं जैतून की धरती शाम में ईश दूत "ईशा" पैदा हुये और सिना के पर्वत "तूर" पर ईश दूत "मूसा" से अल्लाह ने बात की, एवं शान्ति के नगर मक्का

में अन्तिम ईश दूत नराशंस "मुहम्मद" (उन पर अल्लाह की दया एवं शान्ति हो) आये, जिन्होंने ईश्वरीय विधान एवं सत्य का प्रचार किया ।

फिर अल्लाह ने कहा है कि हमने इन्सान को मनोहर रुप दिया, फिर भी वह अपने कुकर्म एवं पाप के कारण पतित और नीच बन जाता है, हाँ जिसने अल्लाह एवं धर्म के प्रति विश्वास किया और धर्म का पालन एवं शुभ कर्म किया वह ऐसा नहीं और उसी के लिये परलोक में अनन्त सुख है,

अन्तिम आयतों में अल्लाह ने कहा कि जब अल्लाह ने पुरे विश्व को पैदा किया तो वह एक दिन प्रलय कर फिर सब को पुनर्जीवित करने का सामर्थ्य नहीं रख सकता ? फिर परलोक तथा प्रतिफल को नकारने का क्या औचित्य है ? क्या अल्लाह सर्वशक्तिमान नहीं है ? निस्सन्देह है ।

सूरह इक़्रा

(यह मक्की है और इस में उन्नीस आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं कृपाशील है ।

(हे नराशंस!) अपने पालनहार के नाम से पढ़ो जिस ने पैदा किया। (१) इन्सान को रक्त की जोंक से उत्पन्न किया । (२) पढ़ो, और तुम्हारा पालनहार बड़ा दयाशील है, (३) जिसने क़लम के द्वारा ज्ञान सिखाया, (४) इन्सान को वह बातें सिखाई जिन से अज्ञान था । (५)

भावार्थ:-

जब नराशंस चालीस वर्ष के हुये तो एक दिन मक्का के एक पर्वत जिसका नाम ज्योतिका पर्वत है उस की गुफा में जिस का नाम "गारे हिरा" है अल्लाह के ध्यान में लीन थे कि एक देव दूत "जिबरील" प्रकट हूये एवं आप को यह पाँच आयते पढ़ाई पहले तो आप ने कहा कि मैं अनभिज्ञ हूँ पढ़ना नहीं जानता किन्तु स्वर्ग दूत ने आप को अपनी छाती से तीन बार लगाया तो आप पढ़ने लगे फिर देव दूत चले गये और आप महाईश दूत होकर अपने घर आये आप भयभीत थे और अपनी कथा अपनी पत्नी "खदीजा" को सुनाई उन्होंने आप को साहस दिया और कहा कि अल्लाह आप जैसे परोपकारी व्यक्ति को नाश नहीं करेगा।

किन्तु इन्सान दुष्ट हो जाता है, (६) जब स्वयं को धनवान देखता है । (७) निस्सन्देह (उस को) तुम्हारे पालनहार की ओर लौटना है । (८) भला तुम ने उसे देखा जो रोकता है, (९) एक भक्त को जब वह प्रार्थना करता है । (१०) देखो कि यदि यह सत्पथ पर हो, (११) अथवा संयम का आदेश करे । (१२) और देखो ! कि यदि उसने (धर्म को) झुटलाये तथा मुँह फेर लिया, (१३) क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह उसे देख रहा है । (१४) यदि वह रूकेगा नहीं तो हम उसे ललाट के केश पकड़ कर घसीटेंगे, (१५) मिथ्या पापी मस्तक को ! (१६) फिर वह अपनी सभा बुलाये, (१७) हम नरक के दूतों को बुलायेंगे । (१८) (हे! भक्त) कदापि उस की बात नमानो एंव सज्दः करो और मेरी समीपता प्राप्त करो । (१९)

भावार्थ:-

इन आयतों में एक वाक्य कि ओर संकेत है जिसका वर्णन यह है कि एक समय नराशंस आदि तिर्थस्थल "काबा" के पास नमाज़ पढ़ रहे थे ये देख कर आप

के चचा अबुलहब ने जो आप के धर्म का विरोधी था कहा कि कोई अमुक व्यक्ति के यहाँ जाये और ऊँटनी की आँवल लाये एवं जब नराशंस सिज्दा करें तो उन के ऊपर रखदे और उस ने यही किया, और इसी पर यह आयतें उतरीं ।

अबूलहब एक धनवान व्यक्ति एवं नराशंस का विरोधी था- यह दुष्ट मुसलमानों के साथ युद्ध में मारा गया ।

सूरह क़द्रि

(यह मक्की है, इसमें पाँच आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो दयावान एवं दयालु है ।

हम (अल्लाह) ने इस (कुर्आन) को प्रतिष्ठित रात्री में उतारा । (१) एवं तुम क्या जानों कि सम्मानित रात्री क्या है । (२) आदर्श रात्री हज़ार महीने से उत्तम है । (३) उस में स्वर्ग - दूत एवं आत्मा (एक स्वर्ग दूत का नाम) प्रत्येक कार्य की (व्यवस्था) हेतु अपने पालनहार की आज्ञाँ से अवतरित होते हैं (४) यह भोर के उदय तक शान्ति की रात्री होती है । (५)

भावार्थः-

इस सूरह में पवित्र कुर्आन के संसार में अवतरित होने के समय एवं उस रात्री की महिमा का वर्णन किया गया है जिसमें कुर्आन उतरना आरंभ हुआ, इस रात्री को हजार महीने से उत्तम कहा गया है जिस का तात्पर्य यह है कि इस महा रात्री में अल्लाह की पुजा अराधना करने का पुण्य हजार महीने अराधना उपासना के सम्तुल्य है इस महा रात्री में अल्लाह के फ़रिश्ते धरती पर उतरते हैं एवं इसी रात्री में पुरे वर्ष जो संसार में होना है, उस का निर्णय किया जाता है यह शान्ति की रात्री सुर्यास्त से भोर तक रहती है, एवं इस में कोई जादू टोना नहीं चलता ।

सूरह लम् यकुन

(यह सूरह मदनी है, इस में आठ आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं कृपाशील है ।

आदि शास्त्र धारी अर्थात यहूद एवं इसाई और मिश्रण वादीयों में जो कृतघ्न हो गये वह मानते नहीं, जब तक उनके पास खुला तर्क न आता, (१) (अर्थात) अल्लाह के दूत जो पवित्र शास्त्र का पाठ करें, (२) जिसमें शाश्वत ग्रंथ हैं । (३) और जो आदि शास्त्र दिये गये उन्होंने तर्क आने के पश्चात मत भेद किया । (४) जब कि उन्हीं यही आदेश किया गया था कि धर्म शुद्ध करके सब को त्याग कर मात्र अल्लाह की पुजा करें एवं नमाज की स्थापना करें और दान दें यही शाश्वत धर्म है । (५) निश्चय आदि शास्त्र धारी कृतघ्न एवं मिश्रण वादी नरक की अग्नि में सदा रहेंगे, यही सब उत्पत्ति में अति दुष्ट हैं । (६) एवं जो विश्वास किये और सदाचार किये यही सर्वोत्तम जीव हैं । (७) उनका प्रतिफल उन के पालन हार के पास सदा रहने के बाग हैं जिन के नीचे नहरें प्रवाहित हैं, वह उसमें सदा रहेंगे । अल्लाह उन से खुश एवं वह अल्लाह से खुश। यह (प्रतिफल) उस के लिये हैं जो अपने पालनहार से डरता रहा । (८)

भावार्थः-

इस सुरह में कहा गया है कि ईश दूत नराशंस (उन पर अल्लाह की दया एंव शान्ति हो) सत्य धर्म का प्रमाण हैं एवं धर्म शास्त्र कुर्आन में सभी आदि ग्रन्थों का सारांश है और सभी में मात्र अल्लाह की पुजा करने और परोपकार एवं दान करने और अल्लाह की अराधना करने का आदेश है और यही शाश्वत धर्म है और क्या परिवर्तन किया गया है इस के निर्णय एवम् धर्मो में जो मत भेद होकर अनेक धर्म बना लिये गये हैं उनका विवेक कारी कुर्आन है अतः प्राची धर्म शास्त्रों के अनुयाई हों अथवा मिश्रण वादी, मुर्तियों के पुजारी, अनेकेश्वर वादी सभी कृतध्नों का स्थान नरक है स्वर्ग मात्र उन्ही के लिये है जो मात्र एक परमेश्वर (अल्लाह) के पुजारी एवं सदाचारी और परोपकारी हैं तथा उसी से प्रार्थना एवं विनय करते हैं अन्य देवी देवता की पुजा उपासना नहीं करते यही अल्लाह के प्रियवर भक्त हैं जिनसे वह खुश रहता है ।

सूरह ज़िल्ज़ालि

(यह मदनी है, इसमें आठ आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं कृपाशील है ।

जब भूकम्प आ जायेगा, (१) एवं भुमि अपने बोझ निकाल देगी, (२) एवं इन्सान कहेगा कि इसै क्या हो गया ! (३) उस दिन वह अपनी स्थिति बतायेगी । (४) कि तेरे पालनहार ने उसे यही निर्देश दिया है । (५) उस दिन लोग समुहों में आयेंगे ताकि उन के कर्म पत्र दिखा दिये जायें । (६) और जिसने अणुभर पूण्य किया होगा उसे देखेगा । (७) एवं जिसने अणुभर दुराचार किया होगा उसे देखेगा । (८)

भावार्थ:-

इस सूरह में प्रलय की भीषण स्थिति का चित्रण किया गया है कि उस दिन भीषण भूचाल होकर धरती के भीतर के सभी पदार्थ खनिज और शव आदि उपर आजायेंगे और इन्सान स्तब्ध हो कर कहेगा कि धरती को यह क्या हो गया है एवं धरती स्वयं बतायेगी कि अल्लाह का आदेश यही है, फिर पुनर्जीवित करके सभी का कर्म पत्र उसे प्रस्तुत कर दिया जायेगा और अपने क्रमानुसार सभी को स्वर्ग अथवा नरक में जाना पड़ेगा, अतः उस दिन के लिये सत्य धर्म का पालन करो ।

सूरह अ़दियादि

(मक्की है, इस में ग्यारह आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं कृपाशील है ।

उन घोड़ों की शपथ जो दौड़ कर हाँफ जाते हैं, (१) फिर पत्थर पर टाप मार कर आग निकालते हैं, (२) फिर प्रातः धावा करते हैं (३) फिर धूल उड़ाते है, (४) फिर सेना के बीच घुस जाते है; (५) निश्चय इन्सान अपने पालनहार का कृतध्न है। (६) एवं वह इस पर शाक्षी है । (७) वह धन का घोर प्रेमी है । (८) क्या वह उस समय को नहीं जानता कि जो समाधियों में हैं निकाले जायेंगे, (९) एवं मनों के भेद प्रकाश में लायें जायेंगे । (१०) निश्चय उन का पालनहार उस दिन उन से सुचित होगा। (११)

भावार्थ:-

इस सूरह में मानव जाति की कृतघ्नता का वर्णन करने हेतु उदाहरणार्थ "एक पशु कि भक्ति को पेश किया गया है जो अपने स्वामी को लाद कर नीचें ऊँचे मार्ग पर दौड़ता है उस के लिये अपनी जान जोखिम में डाल देता है एवं शत्रुकी सेना में घुस जाता है, किन्तु इन्सान इतना कृतघ्न है कि वह अल्लाह की आज्ञाँ का सदा उल्लघंन करता रहता है एवं धन के प्रेम में अल्लाह की आज्ञाँ की कोई परवाह नहीं करता और वह ऐसा जान बुझ कर करता है ।

फिर अल्लाह ने कहा है कि प्रलय के दिन इन्सान फिर जीवित किया जायेगा एवं उन के विचारों और कर्मो के अनुसार प्रतिफल मिलेगा वहाँ धन काम नहीं आयेगा वहाँ ईश्भक्ति ही का मुल्य होगा, अतः इन्सान को घोड़े से भक्ति सीखनी चाहिये ।

सूरह अलकारिअः

(मक्की है, इस में ग्यारह आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं दयाशील है ।

अकस्मात घटना ! (१) एवं तुम अकस्मात घटना क्या जानो ? (२) जिस दिन मनुष्य बिखरें पतँगों के समान व्याकुल होंगे, (३) एवं पर्वत धुनी रुई के समान उड़ेंगे । (४) फिर जिसके कर्म का तुला भारी होगा, वह मनचाहे सुख में होगा । (५) एवम् जिसका तुला हल्का होगा, (६) उस का स्थान हावियः होगा । (७) और तुम जानते हो कि हावियाा क्या है । (८) वह दहकती अग्नि है । (९)

भावार्थ:-

इस सूरह की अरंभिक आयतों में प्रलय की बिनाशकारी घटना का चित्रण करते हुये सुचित किया गया है कि परलोक में प्रत्येक मनुष्य को अपने शुभाशुभ कर्म का फल मिलेगा कोई स्वर्ग में तो कोई अपने क्रमानुसार धधकती नरक में प्रवेश पायेगा,

किसी वाक्य को प्रश्न के रुप में उस का महत्व दिखाने के लिये प्रस्तुत किया जाता है :-

सूरह तकासुरि

(यह मक्की है, इस में आठ आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं कृपाशील है ।

तुम को अधिक धन के लोभ ने लापरवाह कर दिया, (१) यहाँ तक कि तुमने समाधि स्थल की यात्रा की । (२) निश्चय ही तुम को विदित हो जायेगा । (३) पुनः निश्चय ही तुमको ज्ञान हो जायेगा । (४) यदि तुम को विश्वास होता (तो लापरवाह न होते!) (५) तुम नरक को अवश्य देखोगे ! (६) फिर तुम उसे विश्वास की आँख से देखोगे । (७) फिर उस दिन तुम से ईश्वरीय पुरस्कारों के विषय में अवश्य पूछ होगी । (८)

भावार्थ:-

इस सूरह में मानव गण को सदाचार का निर्देश किया गया है और कहा गया है कि वह माया मोह एवं धन के लोभ में परलोक से लापरवाह रहता है तथा इसी अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, वह धर्म कर्म नहीं करता - किन्तु उसे विश्वास

हो जायेगा कि धन का कोई मुल्य नहीं - नरक उस के समक्ष होगी और आँख से देख कर उसे विश्वास हो जायेगा उस दिन परलोक में प्रत्येक व्यक्ति से यही पूछ होगी कि अल्लाह ने उसकी उत्पत्ति की, उसे आयु, धन, बल तथा ज्ञान दिया तो उस ने उसकी आज्ञाँ का पालन कितना किया, फिर जो कृतज्ञ होगा वह स्वर्ग में जायेगा और जो माया मोह में फंस कर रह गया वह नरक में जायेगा ।

सूरह अस्रि

(मक्की है, इस में तीन आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं कृपाशील है ।

युग की शपथ । (१) निश्चय मानव घाटे में है । (२) किन्तु जो विश्वास एवं सदाचार किये, एवं सत्य का उपदेश करते रहे, तथा सहनशीलता का उपदेश करते रहे । (३)

भावार्थ:-

मनुष्य के सभी शुभाशुभ कर्म समय एवं युग के भीतर होते हैं अतः उसका महत्व दिखाकर अल्लाह ने कहा है कि मनुष्य घाटे में है एवं उस का वही कर्म फलदायक है जो अल्लाह की आज्ञाँ के आधीन करता है जो स्वयं सदाचार करता और दूसरे को सदाचार एवं सहनशीलता का उपदेश करता है क्युं कि परलोक में इसी का फल स्वर्ग एवं अनन्त सुख है ।

सूरह हुमज़ति

(मक्की है, इसमें नौ आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो अति दयालु एवं कृपाशील है ।

विनाश है ! प्रत्येक निन्दक लुतरे के लिये, (१) जिसने धन एकत्रित किया तथा गिन कर रखा, (२) वह सोचता है कि उस का धन उसे सदा जीवित रखेगा । (३) कदापि नहीं, वह अवश्य "हुतमः" में प्रवेश करेगा । (४) तुम नहीं जानते कि "हुतमः" क्या है ? (५) अल्लाह की सुलगाई अग्नि है, (६) जो हृदय तक चढ़ जाती है (७) वह उसमें बन्द करदिये जायेंगे (८) (अर्थात) अग्नि के लघु स्तंभों में । (९)

भावार्थ:-

इस सूरह में ऐसे व्यक्ति की जो सत्य की निन्दा करता एवं धन अकत्रित करता है और उसी को जीवन का लक्ष्य समझता है एवं कोई सदाचार और उपकार नहीं करता उस का अन्त बताया गया है कि वह परलोक में नरक का भागी एवं नरक का बन्दी होगा, और उस की तीव्र अग्नि में जलेगा ।

सूरह अलफ़ीलि

(यह मक्की है, इस में पांच आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं कृपाशील हैं ।

क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पालनहार ने हाथी वालों के साथ क्या किया? (१) क्या उन की चाल को विफल नहीं किया ? (२) एवं उन के ऊपर पंक्षियों का

झुंड भेजा (३) जो उन पर पत्थरीली कंकरियाँ फेंक रहे थे, (४) और उन को खाया भुसा कर दिया । (५)

भावार्थ:-

इस सूरह में मक्का के निवासियों को सुचित किया गया है ईश दूत नराशंस (मुहम्मद - उन पर अल्लाह की दया एवं शान्ति हो) को मानो अन्यथा तुम्हारा अन्तिम वही होगा जो यमन के राजा "अब्रहा" का हुआ जो मक्तेश्वर के आदि पुष्कर "काबा" को ध्वस्त करने के लिये हाथियों की सेना लेकर आया और अल्लाह ने अपने घर की सुरक्षा के लिये पक्षियों का समूह भेजा जो अब्रहा पर आकाश से पत्थरीली कंकरियों बरसाने लगे और उस की सेना को खाये भूसे के समान कर दिया तथा विफल हो गया इसी प्रकार नराशंस के विरोध की तुम्हारी सभी उपाय विफल हो जायेगी और अन्त में नराशंस को सफलता मिलेगी और यही हुआ ।

सूरह कुरैश

(यह सूरह मक्की है, इस में चार आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं कृपाशील है ।

(मक्का के निवासी वर्ग) कुरैश के परिचित होने के कारण (१) अपने जाड़े एवम गर्मी में यात्रा से परिचित होने के कारण । (२) उन्हे चाहिये कि इस घर के पालनहार की पूजा करें, (३) जिसने उन को भूख मे भोजन दिया एवं भय से निर्भय किया।

भावार्थ:-

मक्का के निवासी कुरैश व्यवसायिक यात्रा के लिये जाड़े तथा गर्मी में निर्भय होकर भारत, चीन तथा शाम की यात्रा करते थे एवं आदि पवित्र तीर्थ स्थल "काबा" के नागरिक होने के कारण उनका बड़ा आदर मान होता था किन्तु इस्लाम से पूर्व कुरैश ने पवित्र पुष्कर "काबा" में मूर्तियों की पूजा आरंभ कर दी और जब अन्तिम ईश दूत ने सत्य धर्म एकेश्वर वाद का प्रचार किया तो वह आप के विरोधी हो गये । अतः अल्लाह ने इस सूरह में उन्हें आदेश किया कि अल्लाह की पूजा करो जिसके घर के निवासी होने के कारण तुम निर्भय होकर प्रतिवर्ष दो यात्रा करते हो और निर्भय होकर अपनी आर्थिक आवश्यकता पूरी करते हो अर्थात सत्यधर्म इस्लाम को स्वीकार करलो एवं मूर्तियों की पूजा त्याग दो ।

सूरह माऊनि

(यह सूरह मक्की है, इसमें सात आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं कृपाशील है ।

क्या तुमने उसे देखा जो प्रतिफल को झूटलाता है ? (१) यही अनाथ को धक्का देता है, (२) एवं दीन को भोजन नहीं कराता । (३) विनाश है उन नमाज़ियों के लिये, (४) जो अपनी नमाज़ से वेपरवाह रहते हैं, (५) जो दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ते हैं, (६) तथा मंगनी की वस्तुएं नहीं देते । (७)

भावार्थ:-

इस सूरह में कुच्छ कुकर्मो को परलोक के नकारने का लक्षण बताया गया

है जो कर्मो के प्रतिफल का दिन होगा ।

प्रथम - अनाथ को धिक्कारना एवं लाचार भूके को भोजन न देना, अल्लाह की पुजा उपासना (नमाज़) से लापरवाह होना अथवा दिखावा के लिये अल्लाह की उपासना करना । इसी प्रकार परोपकार न करना एवं साधारण मँगनी की वस्तु भी किसी के माँगने पर न देना और कृपण करना ।

सूरह कौसीर

(सूरह कौसर मक्की है, इस में तीन आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपानिथि एवं कृपाशील है ।

हम (अल्लाह) ने आप (नराशंस) को "कौसर" प्रदान किया है । (१) अतः अपने पालनहार के लिये उपासना करो एवं बालिदो । (२) निःसन्देह आप का शत्रु निःसन्तान रहेगा । (३)

भावार्थः-

नराशंस (मुहम्मद, आप पर अल्लाह की दया एवं शान्ति हो ।) का एक विरोधी जिसका नाम आस पुत्र वायेल है । जब आप की बात की जाती तो कहता कि उस की बात न करो उसका कोई पुत्र जीवित नहीं मात्र पुत्रियाँ हैं उसके निधन के पश्चात कोई उस का नाम नहीं लेगा इसी पर यह सूरह उतरी कि हे ईश दूत(नराशंस) आप दुखी नहों, अल्लाह ने आप को परलोक में एक जलाशय "कौसर" दिया है जिससे आप के अनुयायी परलोक में जल पियेंगे । आप अल्लाह की अराधना करते रहें एवं उसके लिये पशु की बलि दें । आप के शत्रु का उस के निधन के पश्चात कोई नाम नहीं लेगा और आप का नाम संसार में परलोक तक सदा लिया जायेगा और यह एक अकाटय तथ्य है कि अन्तिम ईश - दूत (नराशंस) का नाम पूरे संसार में लिया जा रहा है किन्तु आप के शत्रु "आस" का कोई नाम लेवा नहीं ।

सूरह क़ाफ़िरुन

(यह मक्की सूरह है जिसमें छः आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं कृपाशील है ।

हे ईश दूतः कहदो कि हे कृतध्नो ! (१) तुम जिन मूर्तियों को पूजते हो उनको मैं नहीं पूजता, (२) एवं जिस अल्लाह की मैं पूजा करता हूँ उस की पूजा तुम नहीं करते । (३) मैं फिर कहता हूँ कि जिन की तुम पूजा करते हो मैं उन का पुजारी नहीं हूँ, (४) न तुम उस की पूजा करने को तैयार हो जिस अल्लाह का मैं पूजक हूँ । (५) तुम अपने धर्म पर मैं अपने धर्म पर । (६)

भावार्थः-

जब ईश दूत (नराशंस) ने एकेश्वर का प्रचार किया और मूर्तियों की निन्दा की तो मक्का नगर के अनेकेश्वर वादी मूर्तियों के पुजारी आप के पास आये ओर कहा कि आईयें आपस में यह समझौता कर लिया जाये कि कुच्छ दिन सब मिलकर मूर्तियों की पूजा की जाये फिर कुच्छ दिन अल्लाह की, यही किया जाये, इस पर अल्लाह की ओर से आप को यह आदेश किया गया कि इन से कह दो कि धर्म में कोई समझौती

असंभव है । मैंने भूत तथा वर्तमान में न मूर्तियों की पूजा की न भविष्य में कर सकता, एवं अल्लाह की पूजा के संबंध में तुम्हारी स्थिति भी वैसी ही दिखाई देती है इसलिये ऐसा समझौता असंभव है ।

सूरह इज़ा ज़ाअ

(यह मदनी सूरह है जिसमें तीन आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं कृपाशील है ।

जब अल्लाह की सहायता एवं विजय आई । (१) एवं आप (नराशंस) ने देख लिया कि लोग समूहों में अल्लाह के धर्म में प्रवेश कर रहे हैं, (२) तब आप अपने पालनहार की पवित्रता का जाप उसकी प्रशंसा सहित करें, वह निस्सन्देह क्षमाशील है। (३)

भावार्थ:-

जब अन्तिम ईश - दूत ने अपने नगर मक्का में एक अल्लाह की पूजा की घोषणा की तो मूर्ति पूजकों ने आप का विरोध किया एवं आप को तथा आपके अनुयाइयों को भारी यातनायें दीं । जिसके कारण तेरह वर्ष के बाद आप ने अपने सहचरों के साथ मदीना नगर में शरण ली । वहाँ भी सात वर्ष तक आप को चैन नहीं लेने दिया और कई आक्रमण किये । अन्त में आप की विजय हुई और मक्का तथा आस पास के सभी निवासी मुसलमान हो गये । इस सूरह में अल्लाह ने इसी की चर्चा करते हुये ईश - दूत "मुहम्मद" (आप पर अल्लाह की दया एवं शान्ति हो) को आदेश किया है । वह इस पर अल्लाह की प्रशंसा के साथ उस की पाकी व्यान करे जो अति क्षमाशील है ।

सूरह लहबि

(यह मक्की है जिसमें पाँच आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं कृपाशील है,

अबूलहब का दोनों हाथ टूट गया और वह नाश हो गया । (१) उस का धन उसके काम नहीं आया, (२) न उसकी कमाई (३) वह शीघ्र भड़कती आग में जायेगा, (३) तथा उसकी लकड़ी ढ़ोने वाली पत्नी, (४) जिस की गर्दन में मूँज की रस्सी होगी। (५)

भावार्थ:-

अबू लहब ईश - दूत के चचा का नाम है । जब अल्लाह ने आप को दुतत्व के लिये निर्वाचित किया और यह आदेश दिया कि अपने समीप के परिवार को सचेत करें तो आप मक्का के एक पर्वत "सफा" पर चढ़ गये और पुकारा सब पर्वत के नीचे एकत्र हो गये । आप ने कहा कि यदि मैं कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर प्रातः अथवा सायंकाल आक्रमण करेगी तो तुम मानोगे ? सब ने कहा कि हाँ, हमने आप को कभी झूठा नहीं पाया ।

आप ने कहा कि मैं तुम्हें अल्लाह के घोर दन्ड से सावधान करता हूँ ।

यह सुनकर अबूलहब ने आप पर एकपत्थर चलाया और कहा कि तुम्हारा

नाश हो इसी के लिये हमको बुलाया है ? इसी पर यह सूरह उतरी कि अबुलहब का विनाश हो गया और परलोक में उसका धन उसे नरक के भीषण दन्ड से नहीं बचा सकेगा और उसकी पत्नी जिस का नाम उन्में जमील है अपने पति के साथ नरक में जायेगी जो ईश - दूत के रास्ते में लकड़याँ तथा काँटे डाल दिया करती थी ।

सूरह अख़्लासि

(मक्की है, इसमें चार आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं कृपाशील है ।

(हे ईश दूत!) कह दो कि अल्लाह अकेला है । (१) अल्लाह छिद्र रहित है। (२) वह न जना न जना गया । (३) न उसकी कोई प्रतिमा है । (४)

भावार्थ:-

मक्का के मूर्ति पूजकों ने ईश - दूत नराशंस से कहा कि अपने अल्लाह के गुण, स्वभाव का वर्णन करो । इस पर यह सूरह अल्लाह ने उतारी कि हे नराशंस-! इन्हें बता दो कि अल्लाह एक, अव्रण है अर्थात न किसी का पुत्र है, न उस का कोई पिता है, न उस की कोई प्रतिमा है अर्थात वह स्वयंभू, अनादि, अकाय, सर्वज्ञ है । कोई जीव - जन्तु अथवा वस्तु उसके समान नहीं है । अतः पूज्य मात्र वही है । उस के सिवाय किसी की पुजा नहीं ।

सूरह फ़लक़ि

(यह मदनी है, इस में पांच आयतें हैं ।)

अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवं कृपाशील हैं ।

(हे नराशंस !) कहो कि मैं प्रभात के स्वामी की शरण लेता हूँ, (१) उसकी बुराई से जिसे पैदा किया है, (२) एवं रात्री कै अंधकार की बुराई से जब छाजाये, (३) एवं गाँठों में फूँकने वालियों की बुराई से, (४) एवं ईर्षालु की बुराई से जब ईर्षा करे । (५)

सूरह नासि

(मदनी है, इसमें छः आयतें हैं ।)

आरंभ अल्लाह के नाम से जो कृपानिधि एवृ कृपाशील हैं ।

(हे नराशंस) कहो कि मैं मानव के पालनहार, (१) मानव के अधिपति, (२) मानव के पूज्य की शरण लेता हूँ । (३) संशयकारी राक्षस की बुराई से, (४) जो दबक जाता है, (५) भूतों तथा मनुष्यों में से । (६)

भावार्थ:-

नराशंस की पत्नी "आइशा" कहती हैं कि एक समय आप की दशा ऐसी हो गई कि आप कोई काम करते और आप को उसके न करने का सन्देह होता । इसी बीच एक दिन आपनें मुझे बताया कि मेरे पास सपने में दो व्यक्ति आये और एक ने दूसरे से कहा कि इसे क्या हुआ है ? उसने उत्तर दिया कि इसे जादू किया गया है । उसने प्रश्न किया कि किसने ? दूसरे ने उत्तर दिया कि "आसमा" के पुत्र "लबीद"

ने, पहले ने कहा कि किस वस्तु में ? दूसरे ने कहा कि कंधा के कुच्छ दाँत तथा बालों में, फिर उसने पूछा कि कहाँ है ? दूसरे ने बताया कि "अर्वान" नाम के कुवें में और ईश दूत ने इन सभी चीजों को कूवें से निकलवाया। उस में आप के बालों में ग्यारह गाँठ दी गई थी। उसी समय दोनों सूरतें उतरी जिन में ग्यारह आयतें है एवं प्रत्येक आयत पढ़ने पर एक - एक गाँठ खुलती गई और आप स्वस्थ हो गये।

लबीद यहूदी ने ईर्ष्या के कारण अपनी दासियों से आप पर जादू कराया था।

شعبة الجاليات
(وزارة الشؤون الإسلامية مركز الدعوة بالرياض)
تليفون ٤١١٦٣٥٦ / ٠١ - الرياض ١١١٣١

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالبديعة
تليفون ٤٣٣٠٨٨٨ / ٠١ فاكس ٤٣٠١١٢٢ / ٠١
ص.ب ٢٤٩٣٢ الرياض ١١٤٥٦

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالبطحاء
تليفون ٤٠٣٠٢٥١ - ٤٠٣٤٥٢٧ / ٠١
فاكس ٤٠٣٠١٤٢ / ٠١
ص.ب ٢٠٨٢٤ الرياض ١١٤٦٥

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد العليا والسليمانية
تليفون ٤٦٢٩٩٤٤ / ٠١
ص.ب ٦٣٩٤٤ الرياض ١١٥٢٦

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد العزيزية
تليفون ٤٩٥٥٥٥٥ / ٠١
ص.ب ٤٢٣٤٧ الرياض ١١٥٥١

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد الدوادمي
تليفون ٦٤٢٣٦٣٦ / ٠١
ص.ب ١٥٩ الدوادمي

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالخرج
تليفون ٥٤٤٠٦٦٢ / ٠١ فاكس ٥٤٨٠٩٨٣ / ٠١
ص.ب ١٦٨ الخرج ١١٩٤٢

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد الربوة
تليفون ٤٩٧٠١٢٦ / ٠١
ص.ب ٢٩٤٦٥ الرياض ١١٤٥٧

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد رياض الخبراء
تليفون ٣٣٤١٧٥٧
ص.ب ١٦٦ القصيم رياض الخبراء

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالمجمعة
تليفون ٤٣٢٣٩٤٩ / ٠٦
ص.ب ١٠٢ المجمعة ١١٩٥٢

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالروضة
تليفون ٤٩١٨٠٥١ فاكس ٤٩٧٠٥٦١
ص.ب ٨٧٢٩٩ الرياض ١١٦٤٢

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالنسيم
تليفون ٢٣٢٨٢٢٦ / ٠١
ص.ب ٥١٥٨٤ الرياض ١١٥٥٣

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالزلفي
تليفون ٤٢٢٥٦٥٧ / ٠٦ فاكس ٤٢٢٤٢٣٤ / ٠٦
ص.ب ١٨٢ الزلفي ١١٩٣٢

مكتب توعية الجاليات بعنيزة
تليفون ٣٦٤٤٥٠٦ / ٠٦ ص.ب ٨٠٨

مركز توعية الجاليات ببريدة
تليفون ٣٢٤٨٩٨٠ / ٠٦ فاكس ٣٢٤٥٤١٤ / ٠٦
ص.ب ١٤٢

المكتب التعاوني للدعوة والارشاد بسلطانة
تليفون ٤٢٤٠٠٧٧ فاكس ٤٢٥١٠٠٥
ص.ب ٩٢٦٧٥ الرياض ١١٦٦٣

مكتب توعية الجاليات المذنب
تليفون ٣٤٢٠٨١٥ / ٠٦ فاكس ٣٤٢٠٨١٥ / ٠٦
القصيم - المذنب - ص.ب ٤٠٠

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بشقراء
تليفون ٦٢٢٢٠٦١ / ٠١ فاكس ٦٢٢١٧١١ / ٠١
ص.ب ١٥٢ شقراء ١١٩٦١

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالأحساء
تليفون ٥٨٧٤٦٦٤ - ٥٨٦٦٦٧٢ / ٠٣
ص.ب ٢٠٢٢ الأحساء ٣١٩٨٢

مكتب توعية الجاليات بالخبر
تليفون ٨٩٨٧٤٤٤ / ٠٣ الدمام ٣١١٣١

المؤسسة الخيرية للدعوة بجدة
تليفون ٦٧٣١٧٥٤ - ٦٧٣٠٤٣١ / ٠٢
فاكس ٦٧٣١١٤٧
ص.ب ١٥٧٩٨ جدة ٢١٤٥٤

مكتب توعية الجاليات بحائل
تليفون ٥٣٣٤٧٤٨ / ٠٦ فاكس ٥٤٣٢٢١١ / ٠٦
ص.ب ٢٨٤٣

المكتب التعاوني للدعوة والارشاد بالقريات
ص.ب ٧٥٥ تلفاكس ٦٤٢٤٠٨٩ / ٠٤

OUR AIMS

1. CALLING OTHERS TO ISLAM.
2. TEACHING THE RITUALS OF ISLAM TO NEW CONVERTS.
3. FOSTERING THE TRUE ESSENCE OF ISLAM AND CORRECTION OF MISCONCEPTS.
4. PROPAGATION OF ISLAMIC LITERATURE IN BOOKS IN AUDIO VIDEO TAPES IN VARIOUS LANGUAGE.
5. TRAINING OF ISLAMIC MISSIONARIES IN MANY LANGUAGES AS POSSIBLE.
6. COOPERATE WITH ISLAMIC DAWAH CENTRES INTERNATIONALY AND LOCALY TO THE ADVANCEMENT OF ISLAM.

KINGDOM OF SAUDI ARABIA
FOREIGNERS GUIDANCE CENTER
IN GASSIM ZONE
Tel : 06 / 3248980 - 3243100 - 3231405 Fax: 06 / 3245414
P.O. Box : 142 BURAIDAH
[طبع على نفقة مركز توعية الجاليات بالقصيم عام ١٤٢٠هـ – ١٩٩٩م]

مطبعة الشريحي - ت ٣٢٣١٣٤٣ ف ٣٢٣١٨٦٦